mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-190 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

12 जुलाई 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

भारतीय महिला ...

@ पेज 7

टेनिस प्लेयर राधिका मर्डर, पिता की थ्योरी पर 7 सवाल

गुरुग्राम (एजेंसी)। गुरुग्राम में टेनिस प्लेयर राधिका यादव की पिता दीपक यादव ने 4 गोलियां मारकर हत्या कर दी। एक गोली कंधे पर और 3 गोलियां उसकी छाती के बराबर पीठ पर लगीं। हत्या के बाद पिता ने कहा कि लोग उसे ताना मारते थे कि बेटी की टेनिस एकेडमी की कमाई खा रहा है। उसने बेटी को एकेडमी बंद करने को कहा था। वह नहीं मानी तो गोली मार दी। गुरुग्राम पुलिस के गले पिता की यह थ्योरी नहीं उतर रही है। राधिका की मां चुप है। पिता के बयान से लेकर मां की चुप्पी तक कई ऐसे सवाल हैं, जो हाई प्रोफाइल बन चुके इस हत्याकांड की वजह को लेकर संदेह पैदा कर रहे हैं। सबसे हैरानी पुलिस को इस बात से है कि इंटरनेशनल लेवल की टेनिस प्लेयर और एक टेनिस एकेडमी चलाने के बावजूद राधिका का कोई सोशल मीडिया अकाउंट क्यों नहीं है? ऐसे में सवाल है कि क्या उससे अकाउंट डिलीट कराए गए? ऐसे ही कई सवाल इस केस को लेकर उठ रहे हैं, जो इस हत्याकांड को पेचीदा बना रहे हैं...

गुजरात महिसागर पुल हादसा- मरने वालों की संख्या 21 हुई

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के वडोदरा जिले में महिसागर नदी पर बने पुराने पुल के ढहने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 21 हो गई है। शुक्रवार को एक घायल की अस्पताल में मौत हुई। मरने वालों का आंकड़ा 20 हो गया है। एक शख्स की तलाश में टीमें जुटी हैं। वडोदरा कलेक्टर अनिल धमेलिया ने कहा- नदी में गिरे एक टैंकर में सल्फ्यूरिक एसिड भरा था। ऐसे में पता लगाया जा रहा है कि उसमें से कोई रिसाव तो नही है। वहीं पानी सोडा ऐश (सोडियम कार्बोनेट) होने के कारण रेस्क्यू टीम को जलन और खुजली हो रही है। हादसे में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हुई है। सीएम भूपेंद्र पटेल ने पुल ढहने के सिलसिले में राज्य के सड़क एवं भवन विभाग के चार इंजीनियरों को निलंबित कर दिया है। हादसे की शुरूआती जांच में पाया गया कि पुल की नींव और जोड़ कमजोर हो चुके थे, जिससे यह हादसा हुआ। जांच समिति 30 दिन में पूरी रिपोर्ट देगी। महिसागर नदी पर बना ब्रिज 9 जुलाई की सुबह टूट गया था। चलते ट्रैफिक के बीच पुल टूट जाने से दो ट्रक, दो कार और एक रिक्शा नदी में गिर गए थे। एक टैंकर टूटे सिरे पर फंस गया था।

शिवसेना विधायक कैश से भरे बैग के साथ दिखे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के औरंगाबाद पश्चिम से शिवसेना (शिंदे गुट) विधायक और फडणवीस सरकार में कैबिनेट मंत्री संजय शिरसाट का कैश से भरे बैग के साथ वीडियो सामने आया है। उद्धव गुट के शिवसेना सांसद संजय राउत ने शुक्रवार को एक्स पर शिरसाट का वीडियो शेयर किया। इसमें वह एक कमरे में बिस्तर पर बैठकर सिगरेट पी रहे हैं। उनके बगल में पैसों से भरा एक बैग रखा है। कमरे में एक कुत्ता भी दिखा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया कल के शहरों का निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर में मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025 अन्तर्गत कल के शहरों का निर्माण थीम पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में विकास के लिए संचालित विभिन्न प्रोजेक्ट्स के माध्यम से विकसित सुदृढ़ अधोसंरचना, नवाचारों, निवेश प्रोत्साहन नीतियों एवं योजनाओं से संबंधित प्रकल्प प्रदर्शित किए गए। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर सराहना की।

प्रदर्शनी में इंदौर विकास प्राधिकरण की अधोसंरचना विकास के लिए अपनाए गए मॉडल जिसमें पीपीपी मोड पर आधारित बहुउद्देशीय स्पोर्ट्स पार्क के निर्माण, एयरपोर्ट के पास कन्वेंशन सेंटर, इंदौर में स्टार्टअप

कल्चर को बढ़ावा देने के लिए निर्माणाधीन स्टार्टअप पार्क को प्रकाशित किया गया। प्रदर्शनी में सारे प्रोजेक्ट्स की जानकारी को डिजिटली उपलब्ध कराने के लिए क्यूआर कोड की व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डिजिटल व्यवस्था देखकर प्रसन्नता व्यक्त की।

कल के शहरों के निर्माण में मेट्रो रेल की भूमिका को दर्शाने वाली प्रदर्शनी में इंदौर मेट्रो रेल परियोजना (येलो लाइन), भोपाल मेट्रो रेल परियोजना (ऑरेंज और ब्लू लाइन), रोलिंग स्टॉक (ट्रेन) देशी तकनीक से निर्मित आधुनिक मेट्रो ट्रेनें, सूचनात्मक पैनल को प्रदर्शित किया गया जिसके माध्यम से कल के शहरों में आवागमन के सशक्त साधन को दिखाया गया है।

हिमाचल में 21 दिन में 91 लोगों की मौत

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में 20 जून को मानसून की एंट्री हुई थी। बीते 21 दिन में बारिश से जुड़ी घटनाओं में 91 लोगों की मौत हुई है। इनमें बाढ़, लैंडस्लाइड और सड़क हादसे शामिल हैं। राज्य की 200 से ज्यादा सड़कें बंद हैं। यूपी के कई जिलों में शुक्रवार को बारिश हो रही है। चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में शख्स बह गया। वो यहां दर्शन के लिए आया था। वाराणसी के गंगा में बहे व्यक्ति को एनडीआरएफ ने बचाया। यहां गंगा में पानी हर घंटे 2 ष्द्व बढ़ रहा है। एमपी के शहडोल में खेत में काम कर रहे 13 साल के लड़के पर बिजली गिरी।

कर्नाटक हाईकोर्ट- कन्नड़ अनिवार्य करने पर केंद्र-राज्य को नोटिस

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक हाईकोर्ट ने कन्नड़ भाषा की पढ़ाई अनिवार्य करने पर सरकार से जवाब मांगा है। इसके लिए तीन हफ्ते का समय दिया है। अदालत ने राज्य और केंद्र सरकार को नोटिस भी जारी किए हैं। राज्य के सीबीएससी और सीआईएससीई स्कूलों में कन्नड़ की पढ़ाई अनिवार्य करने के खिलाफ 2023 में एक जनहित याचिका दायर हुई थी। कार्यवाहक चीफ जस्टिस वी कामेश्वर राव और जस्टिस सीएम जोशी की बेंच ने शुक्रवार को मामले में सुनवाई करते हुए यह निर्देश दिया। दो साल से ज्यादा समय बीतने के बाद भी सरकार ने मामले में कोई आपत्ति दाखिल दाखिल नहीं की है। इस पर बेंच ने कहा कि अपनी मशीनरी तैयार करें, वरना हम अंतरिम राहत देने पर विचार करेंगे। याचिका में कन्नड़ लैंग्वेज लर्निंग एक्ट- 2015, कन्नड़ लैंग्वेज लर्निंग रूल- 2017 और कर्नाटक एजुकेशनल इंस्टीट्यूट रूल- 2022 को चुनौती दी गई है। पसंद की भाषा चुनने से रोकते हैं कानून याचिका में कहा गया है कि तीनों कानून स्टूडेंट्स को अपनी पसंद की तीन भाषाएं चुनने के अधिकार का उल्लंघन करते हैं। इससे उनके रिजल्ट और भविष्य में रोजगार के अवसरों पर खराब असर पड़ सकता है। साथ ही अन्य भाषाएं पढ़ाने वाले टीचरों की आजीविका भी खतरा में पड़ सकती है। याचिका में हाईकोर्ट के पिछले आदेश का हवाला दिया गया है, जिसमें डिग्री कोर्सेज में कन्नड़ अनिवार्य करने संबंधी आदेश पर रोक लगाई गई थी।

ऑपरेशन सिंदूर पर पहली बार बोले एनएसए डोभाल

चेन्नई (एजेंसी)। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने शुक्रवार को ऑपरेशन सिंदूर पर पहली बार बयान दिया। उन्होंने कहा कि कई विदेशी मीडिया ने पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कार्रवाई पर सवाल उठाए। भारत को नुकसान की खबरें चलाईं। उन्होंने कहा कि विदेश मीडिया कोई भी फोटो या सैटेलाइट इमेज नहीं दिखा पाया। ना यह बता पाया कि नुकसान क्या हुआ। डोभाल ने यह बात शुक्रवार को आईआईटी मद्रास के 62वें दीक्षांत समारोह में कही। वे कहते रहे कि पाकिस्तान ने ये किया, वो किया लेकिन मुझे एक फोटो दिखाइए जिसमें भारत का नुकसान नजर आए। यहां तक कि एक शीशा भी टूटा हो। हमसे कोई चूक नहीं हुई। हम उस पॉइंट तक सटीक थे जहां हमें पता था कि कौन कहां है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकी हमला हुआ था। आतंकियों ने 26 टूरिस्ट्स की हत्या कर दी थी। इसके जवाब में भारत ने 7 मई को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और पाकिस्तान में मौजूद 9 आतंकी ठिकानों पर एयरस्ट्राइक की थी। इस दौरान सेना ने 100 आतंकी मार गिराए थे। दोनों देशों के बीच 10 मई की शाम 5 बजे से सीजफायर पर सहमति बनी थी।

राहुल बोले-महाराष्ट्र की तरह बिहार में वोट चुराने की कोशिश

भुवनेश्वर (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को ओडिशा में कहा- महाराष्ट्र की तरह बिहार में वोट चुराने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए इलेक्शन कमीशन ने नई साजिश शुरू की है। वह भाजपा के हिस्से का काम कर रहा है। अपना काम नहीं कर रहा है। राहुल ने आगे कहा- महाराष्ट्र में लोकसभा और विधानसभा के बीच में 1 करोड़ नए वोटर आ गए। आज तक पता नहीं चल पाया

कि ये वोटर्स कहां से आए। हमने इलेक्शन कमीशन से कई बार कहा कि आप हमें वोटर लिस्ट, वीडियोग्राफी दीजिए। उन्होंने नहीं दिया। हम इलेक्शन कमीशन और भाजपा को बिहार का चुनाव चोरी नहीं करने देंगे।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ओडिशा में भाजपा सरकार बनने के बाद पहली बार दौरे पर पहुंचे हैं। इस दौरान उन्होंने भुवनेश्वर में आयोजित होने वाली संविधान बचाओ समावेश% सभा को संबोधित किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, महासचिव (संगठन) के. सी. वेणुगोपाल भी उनके साथ मौजूद रहे।

एक देश एक चुनाव पर जेपीसी की बैठक जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक देश-एक चुनाव के लिए 129वें संशोधन बिल पर जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी की बैठक संसद भवन में चल रही है। आज की मीटिंग में पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस जगदीश सिंह खेहर कमेटी के सामने सुझाव देंगे। बैठक में शामिल होने कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी, भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर, संबित पात्रा समेत जेपीसी के अन्य सदस्य पहुंचे हैं। संसद में पेश हुए 129वें संविधान संशोधन बिल पर चर्चा करने और सुझाव लेने के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री पीपी चौधरी की अध्यक्षता वाली 39 सदस्यीय

जेपीसी बनाई गई है। जेपीसी का काम बिल पर व्यापक विचार-विमर्श करना, विभिन्न पक्षकारों और विशेषज्ञों से चर्चा करना और अपनी सिफारिशें सरकार को देना है। अब तक कमेटी की 4 बैठकें हो चुकी हैं।

भागवत बोले- 75 की उम्र में रिटायर हो जाना चाहिए

नागपुर (एजेंसी)। भागवत ने 9 जुलाई को रामजन्मभूमि आंदोलन के प्रेरक दिवंगत मोरोपंत पिंगले पर लिखी पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में ये बातें कहीं थीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि 75 साल की उम्र के बाद नेताओं को रिटायरमेंट ले लेनी चाहिए। भागवत ने कहा, जब आपको 75 साल पूरे होने पर शॉल ओढ़ाई जाती है तो समझिए कि दूसरों का मौका देने का समय आ गया है। आपको किनारे हो जाना चाहिए भागवत ने ये बातें 9 जुलाई को रामजन्मभूमि आंदोलन के प्रेरक दिवंगत मोरोपंत पिंगले पर

लिखी पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में कहीं। मोदी और भागवत, दोनों इस साल सितंबर में 75 साल के हो जाएंगे। भागवत के इस बयान के बाद विपक्षी पार्टियां इसे प्रधानमंत्री से जोड़ रहे हैं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, बेचारे पुरस्कार जीवी प्रधानमंत्री! यह कैसी घर वापसी है। लौटते ही सरसंघचालक ने उन्हें याद दिलाया कि 17 सितंबर, 2025 को वे 75 साल के हो जाएंगे। जयराम रमेश ने आगे लिखा, प्रधानमंत्री भी सरसंघचालक से कह सकते हैं कि वे भी 11 सितंबर, 2025 को 75 साल के हो जाएंगे!

मुजफ्फरनगर में कांवड़ियों का हंगामा, राहगीर को पीटा

वाराणसी (एजेंसी)। आज सावन का पहला दिन है। काशी विश्वनाथ मंदिर में सुबह से ही भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। भीड़ इतनी है कि सिर्फ 1 सेकेंड के लिए ही भक्तों को बाबा के दर्शन मिल रहे हैं। कमिश्नर एस. राजलिंगम ने श्रद्धालुओं पर फूल बरसाए। बाबा विश्वनाथ मंदिर का ड्रोन वीडियो सामने आया है, जिसमें बाबा का भव्य दरबार दिखाई दे रहा है। मंदिर प्रशासन ने पूरे सावन भर काशी विश्वनाथ में वीआईपी दर्शन पर रोक लगा दी है। वहीं, गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में सीएम योगी ने हवन-पूजन के साथ रुद्राभिषेक किया। अयोध्या, लखनऊ और प्रयागराज के शिव मंदिरों में भी भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। हर-हर महादेव के जयकारों से मंदिर परिसर गूंजते रहे। मेरठ में मुस्लिम कारीगर ने ऑपरेशन सिंदूर की थीम पर कांवड़ बनाई।

पटना नगर निगम बोर्ड की मीटिंग में फटे कुर्ते

पटना (एजेंसी)। पटना नगर निगम के पार्षदों की मीटिंग में आज जमकर हंगामा हुआ। पार्षदों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि वे आपस में भिड़ गए और हाथापाई करने लगे। इस दौरान कई पार्षदों के कुर्ते भी फट गए। हंगामे की वजह से मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। विवाद के बीच नगर निगम की मेयर सीता साहू भी मौजूद थीं, उन्होंने पार्षदों को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन वो मानने को तैयार नहीं थे।

बिहार में हो रहे वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन को लेकर राहुल गांधी ने एक बार फिर चुनाव आयोग पर फिर सवाल उठाए हैं। शुक्रवार को उन्होंने भुवनेश्वर में एक सभा को संबोधित करते हुए कहा- चुनाव आयोग ने नई साजिश की है। चुनाव आयोग भाजपा का काम कर रहा है।

पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने बिहार पुलिस तंज कसा है। उन्होंने एक्स पर लिखा- एनडीए के खगड़िया सांसद के कुत्ता को खोज निकालने के लिए बिहार पुलिस को पूरा देश सलाम करता है। मैं पूरी जिम्मेदारी से प्रधानमंत्री से आग्रह करता हूं कि वह बिहार पुलिस को भारत रत्न से सम्मानित करें। बिहार में कायम रखने के लिए भी बिहार पुलिस को सर्वोच्च सम्मान दिया जाना चाहिए।

दरअसल, भागलपुर की इशाकचक थाना की पुलिस ने खगड़िया सांसद राजेश वर्मा के खोए हुए कुत्ते को 2 दिनों में ढूंढ निकाला। राजेश वर्मा का कुत्ता 2 दिन पहले उनके भागलपुर के खरमनचक वाले आवास से निकलकर भाग गया था। काफी खोजबीन के बाद भी कुत्ते का कुछ पता नहीं चल पाया था। इस बारे में सांसद की ओर से स्थानीय जोगसर थाना की पुलिस को कुत्ते के खो जाने की जानकारी दी गई थी।

शुभांशु शुक्ला 14 जुलाई को धरती पर लौटेंगे

टेक्सास (एजेंसी)। भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला 14 जुलाई को धरती पर लौटेंगे। अमेरिकी स्पेस ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी। एक्सियम-4 मिशन के तहत शुभांशु सहित चार क्रू सदस्य इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे थे।

एक्सियम मिशन को 25 जून को फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया था। ड्रैगन अंतरिक्ष यान 28 घंटे की यात्रा के बाद 26 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर डॉक किया गया था। हालांकि, यह मिशन 14 दिनों का था।

अब एस्ट्रोनॉट की वापसी चार दिन देरी से होगी। इससे पहले 6 जुलाई को शुभांशु के आईएसएस स्टेशन से कुछ तस्वीरें सामने आईं थीं। जिसमें शुभांशु कपोला मॉड्यूल के विंडो से पृथ्वी देखते नजर आ रहे थे।

थप्पड़कांड के आरोपी नरेश मीणा को हाईकोर्ट से जमानत

जयपुर (एजेंसी)। देवली-उनियारा उपचुनाव-2024 में उपखंड अधिकारी को थप्पड़ मारने वाला नरेश मीणा जेल से बाहर आएगा। शुक्रवार सुबह राजस्थान हाईकोर्ट ने थप्पड़कांड के बाद हुई आगजनी के मामले में जमानत दी है। मीणा को थप्पड़ मारने के केस में पहले ही जमानत मिल चुकी है। हालांकि, नरेश मीणा के शुक्रवार को जेल से बाहर आने की संभावना कम है। इधर, नरेश को जमानत मिलने के बाद कोर्ट रूम के बाहर उनके वकील भावुक हो गए। दरअसल, 13 नवंबर 2024 को टोंक के समरावता गांव में निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा ने एसडीएम अमित चौधरी को थप्पड़ मार दिया था। इसके बाद समरावता सहित कई इलाकों में आगजनी और तोड़फोड़ कर घटना हुई थी।नरेश मीणा के वकील फतेहराम मीणा ने बताया कि इससे पहले इसी मामले में नरेश मीणा की दो जमानत याचिकाएं हाईकोर्ट से खारिज हो चुकी हैं। हाईकोर्ट ने 14 फरवरी को पहली और 30 मई को दूसरी जमानत याचिका को खारिज कर दिया था। लेकिन आज जस्टिस प्रवीर भटनागर की अदालत ने नरेश मीणा की तीसरी जमानत याचिका को स्वीकार करते हुए उसे जमानत दे दी।

वेटरनरी ग्राउंड में फायरिंग के बाद छात्रों का प्रदर्शन

पटना (एजेंसी)। पटना के वेटरनरी ग्राउंड में गुरुवार की देर शाम खेलने के दौरान मारपीट और फायरिंग की घटना हुई। इस घटना में स्टूडेंट मयंक की हाथ में गोली लगी है, जिसका इलाज चल रहा है। शुक्रवार को इस मामले को लेकर वेटरनरी कॉलेज के स्टूडेंट्स का गुस्सा देखने को मिला। सुबह से कॉलेज कैंपस में प्रदर्शन हो रहा है। घटना एयरपोर्ट थाना क्षेत्र की है। बताया जा रहा है कि 2 दिन पहले भी गोली चलाने वाले शख्स से विवाद हुआ था। प्रदर्शन कर रहे छात्राओं ने

बताया कि कैंपस में किसी तरह की सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। दिन में ही कई बार छेड़खानी की घटना हुई है। शिकायत करने के बावजूद भी कोई कार्रवाई नहीं होती है। कैंपस में सीसीटीवी कैमरे भी नहीं हैं। चार दिनों पहले कार्तिक नामक युवक ने देख लेने की धमकी दी थी। गुरुवार को छात्र शिवम और प्रिंस को टारगेट कर ट्रेनर ने फायरिंग की थी। मयंक को गोली लगने के बाद सहयोगी छात्र मौके पर पहुंचे और उसे निजी अस्पताल में भर्ती कराया। यहां उनका इलाज चल रहा है।

नया बिजली कनेक्शन लेना हुआ आसान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र के सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं हेतु सरल और सुविधाजनक तरीके से त्वरित नवीन बिजली कनेक्शन प्रदान किए जा रहे हैं। उपभोक्ताओं को सरल संयोजन पोर्टल के माध्यम से आवेदन करते ही निर्धारित समयावधि में घर बैठे ही नवीन कनेक्शन उपलब्ध कराये जा रहे हैं। गौरतलब है कि कंपनी द्वारा विगत जुलाई 2023 से शुरू किये गये ऑनलाइन सरल संयोजन पोर्टल के माध्यम से अब तक भोपाल शहर में 55 हजार से अधिक नए कनेक्शन प्रदान किए जा चुके हैं, जबकि पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में 03 लाख 36 हजार से अधिक नए कनेक्शन सरल संयोजन पोर्टल के माध्यम से सफलतापूर्वक प्रदान किये गए हैं। इनमें 10 किलोवॉट तक के अस्थायी कनेक्शन भी शामिल हैं। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने बताया है कि कंपनी के सरल संयोजन पोर्टल पर आवेदन करते ही निर्धारित समयावधि में तत्काल नया बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। नये कनेक्शन लेने के लिये उपभोक्ताओं को बिजली कंपनी के पोर्टल एप पर जाकर जरूरी दस्तावेज अपलोड कर समस्त औपचारिकताएं पूर्ण करते हुए निर्धारित शुल्क का ऑनलाइन भुगतान करना होगा। आवेदक द्वारा विधिवत ऑनलाइन आवेदन और भुगतान प्रक्रिया पूर्ण होने के उपरांत बिजली कंपनी द्वारा सर्वे एवं अन्य औपचारिकताएं निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कर उपभोक्ता के परिसर में नया कनेक्शन उपलब्ध करा दिया जाएगा।

आवासीय परिसर में गैर घरेलू गतिविधियां होने पर व्यवसायिक श्रेणी में विद्युत कनेक्शन के लिए स्वैच्छिक आवेदन करने की सलाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि ऐसे उपभोक्ता जो अपने आवासीय परिसर में रेस्ट हाउस, गेस्ट हाउस, पेइंग गेस्ट, प्रायवेट हॉस्टल या अन्य व्यवसायिक गतिविधियों जैसे कोचिंग क्लासेस, ब्यूटी पार्लर आदि चलाते हैं, उन्हें कंपनी ने सलाह दी है कि वे मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सरल संयोजन पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर अपने प्रयोजन को घरेलू से गैर घरेलू (व्यवसायिक) श्रेणी में परिवर्तित करवा लें। कंपनी ने उपभोक्ताओं से यह भी अपील की है कि उपभोक्ता ने जिस प्रयोजन के लिए विद्युत कनेक्शन लिया है, उसी के अनुसार विद्युत का उपभोग करें। उदाहरण के लिए यदि किसी उपभोक्ता ने घरेलू लाइट और फैन का कनेक्शन लिया है तो वे केवल उस परिसर को निवास के रूप में उपयोग करें। कंपनी ने बताया कि सघन चैकिंग अभियान के दौरान किसी भी प्रकार की व्यवसायिक गतिविधि आवासीय परिसर में संचालित की जा रही है तो ऐसी गतिविधियों को गैर घरेलू प्रयोजन में माना जाएगा और संबंधित दोषी उपभोक्ता से जुर्माना वसूल किया जाएगा। उपभोक्ताओं से अपील की गई है कि वे अपने कनेक्शन की जांच करा लें और जिस प्रयोजन के लिए कनेक्शन लिया गया है उसी के अनुसार सही संयोजित विद्युत भार को दर्शाते हुए बिजली कंपनी के सरल संयोजन पोर्टल पर जाकर अपने कनेक्शन प्रयोजन के अनुसार ऑनलाइन आवेदन कर संबंधित टैरिफ श्रेणी में परिवर्तित करा लें।

नेशनल मीन्स कम मेरिट छात्रवृति योजना पर 3 जुलाई को एक दिवसीय कार्यशाला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में राष्ट्रीय मींस कम मेरिट छात्रवृत्ति योजना के सफल क्रियान्वयन के लिये एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा गुरुवार 3 जुलाई को राजधानी भोपाल के होटल अशोका लेक व्यू में किया जा रहा है। इस कार्यशाला में केन्द्र सरकार के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग नई दिल्ली के वरिष्ठ सलाहकार श्री राघवेन्द्र खरे प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करेंगे।

एमपी में एक अटूबर से महंगा होगा टाइगर रिजर्व पर्यटन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एमपी में नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व में घूमना एक अक्टूबर से महंगा हो जाएगा। सरकार ने मौजूदा प्रवेश टिकट फीस में दस फीसदी की बढ़ोतरी करने का फैसला किया है। विदेशी पर्यटकों को भारतीय पर्यटकों की बजाय दोगुनी टिकट फीस देनी होगी। प्रदेश के सभी राष्ट्रीय उद्यानों एवं बाघ अभयारण्यों में भ्रमण के लिए प्रवेश टिकट की बुकिंग एमपी ऑनलाइन के माध्यम से होती है। प्रदेश के ज्यादातर टाइगर रिजर्व में सोमवार से शुक्रवार तक छह लोगों के प्रवेश पर 2400 रुपए और शनिवार-रविवार को 3000 रुपए प्रवेश शुल्क लिया जाता है। एक अक्टूबर से इसमें 10 प्रतिशत की वृद्धि हो जाएगी। इसके बाद पर्यटकों को क्रमशः 240 और 300 रुपए अधिक चुकाने पड़ेंगे। इसमें जिप्सी का किराया शामिल नहीं है। जिप्सी के लिए पर्यटकों को अलग-अलग पार्क में 2000 से 3500 रुपए तक अतिरिक्त देने पड़ते हैं। वहीं विदेशी पर्यटकों को दो गुना शुल्क चुकाना पड़ता है। प्रदेश सरकार ने 22 अक्टूबर 2024 को एक अधिसूचना जारी की थी, जिसमें मैहर जिले के मुकुंदपुर वाइट टाइगर सफारी, भोपाल के वन विहार राष्ट्रीय उद्यान और इंदौर के रालामंडल अभयारण्य के प्रवेश शुल्क में 5 रुपए की बढ़ोतरी की गई थी। इसी अधिसूचना में यह भी

प्रावधान किया गया था कि प्रदेश के सभी संरक्षित क्षेत्रों (नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व) के प्रवेश शुल्क में हर तीन साल में 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी। यह नीति 2025-26 से प्रभावी हो रही है। इसलिए एक अक्टूबर से सभी नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व में घूमना महंगा हो जाएगा। मानसून के कारण प्रदेश के सभी संरक्षित क्षेत्रों में तीन माह (जुलाई से सितंबर) पर्यटन बंद रहेगी। इसके दो कारण हैं। पहला तो यह ब्रीडिंग सीजन है और दूसरा बारिश के कारण नदी-नालों में काफी पानी रहता है। बारिश के कारण जंगल के रास्ते भी खराब हो जाते हैं। ऐसे में पर्यटन कराना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए 1 जुलाई से 30 सितंबर तक सभी पार्क बंद कर दिए जाते हैं। यानी 1 अक्टूबर को इन पार्कों में फिर से पर्यटन शुरू होगा।

विदेशी पर्यटक मध्य प्रदेश के टाइगर रिजर्व को काफी पसंद कर रहे हैं। इनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। अकेले बांधवगढ़ की बात करें, तो पिछले 5 वर्ष में भारतीय पर्यटकों की संख्या 7 लाख 38 हजार 637 और विदेशी पर्यटकों की संख्या 85 हजार 742 रही।

32 साल की सेवा करने के बाद भी नहीं मिली ग्रेच्युटी-पेंशन राशि

भोपाल। कार्यालय कल्याण आयुक्त, भोपाल गैस पीड़ित में 30 से 35 साल तक सेवा देने वाले कर्मचारी आज भी ग्रेच्युटी और पेंशन से वंचित हैं। 2023-24 तक यहां 96 कर्मचारी कार्यरत थे। सभी को केंद्र सरकार के वेतनमान और भत्तों का लाभ मिला। भविष्य निधि और अर्जित अवकाश की पात्रता भी दी गई। सेवा निवृत्ति के बाद भी कर्मचारियों को ग्रेच्युटी और पेंशन नहीं मिली। यह विभाग शुरू से ही केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अधीन है। नियम के अनुसार 10 साल सेवा के बाद कर्मचारी ग्रेच्युटी और पेंशन का हकदार होता है। यहां 32 साल सेवा देने के बाद भी कर्मचारी वंचित हैं। वर्ष 2020 से 2025 के बीच रिटायर 15 से ज्यादा कर्मचारियों के परिवार आज भी आर्थिक तंगी में हैं।

राजस्व प्रकरणों का रिकॉर्ड निराकरण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर लंबित राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिये प्रदेश में 2 चरणों में राजस्व महाअभियान संचालित किये गये। राजस्व महाअभियान में राजस्व प्रकरणों के निराकरण का क्रम राजस्व महाअभियान-2 के बाद भी जारी है। राजस्व महाअभियान-2 के बाद फरवरी-2025 से अब तक राजस्व विभाग द्वारा नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन के 8 लाख 49 हजार 681 प्रकरणों का रिकॉर्ड निराकरण किया गया है। यह निराकरण राजस्व महा-अभियान के बाद जनवरी-2025 के अंत से अब तक किया गया है। राजस्व प्रकरणों के निराकरण की स्थिति, राजस्व न्यायालयों की दक्षता, पारदर्शिता और तीव्रता को दर्शाती है। राजस्व महा-अभियान से प्रकरणों के निराकरण में आयी तेजी लगातार बनी हुई है। नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन के 27 जनवरी, 2025 के बाद से अब तक के प्रकरणों के निराकरण की जिलेवार स्थिति में आगर-मालवा में 10 हजार 417, अलीराजपुर में 2550, अनूपपुर में 10 हजार 690, अशोकनगर में 10 हजार 130, बालाघाट में 21 हजार 897, बड़वानी में 5 हजार 610, बैतूल में 21 हजार 407, भिण्ड में 21 हजार 964, भोपाल में 31 हजार 996, बुरहानपुर में 6 हजार 340, छतरपुर में 28 हजार 325, छिंदवाड़ा में 23 हजार 84, दमोह में 15 हजार 616, दतिया में 14 हजार 501, देवास में 16 हजार 395, धार में 13 हजार 362, डिण्डौरी में 9 हजार 203, गुना में 14 हजार 784, ग्वालियर में 26 हजार 221, हरदा में 5 हजार 704, इंदौर में 31 हजार 540, जबलपुर में 28 हजार 167, झाबुआ में 6 हजार 730, कटनी में 22 हजार 299, खण्डवा में 13 हजार 413, खरगौन में 14 हजार 37, मैहर में 8 हजार 612, मण्डला में 11 हजार 110, मंदसौर में 14 हजार 776, मऊगंज में 6 हजार 788, मुरैना में 21 हजार 538, नर्मदापुरम में 12 हजार 89, नरसिंहपुर में 9 हजार 650, नीमच में 8 हजार 710, निवाड़ी में 4 हजार 491, पांढुर्णा में 5 हजार 16, पन्ना में 11 हजार 544, रायसेन में 15 हजार 343, राजगढ़ में 15 हजार 911, रतलाम में 13 हजार 720, रीवा में 31 हजार 789, सागर में 25 हजार 841, सतना में 18 हजार 959, सीहोर में 17 हजार 112, सिवनी में 20 हजार 725, शहडोल में 12 हजार 646, शाजापुर में 14 हजार 816, श्योपुर में 5 हजार 134, शिवपुरी में 21 हजार 98, सीधी में 13 हजार 653, सिंगरौली में 17 हजार 373, टीकमगढ़ में 11 हजार 387, उज्जैन में 26 हजार 614, उमरिया में 7 हजार और विदिशा जिले में 19 हजार 854 राजस्व प्रकरणों का निराकरण किया गया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप प्रदेश में मातृ भाषा को दिया जाये बढ़ावा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा है कि प्रदेश में स्कूल शिक्षा में मातृ-भाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयास किये जा रहे हैं। मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप श्रेष्ठ कार्य किया जा रहा है।

श्री प्रधान ने यह बात बुधवार को भोपाल में स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह से सौजन्य मुलाकात के दौरान कही। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री? सिंह ने बताया कि प्रदेश में 4473 शासकीय स्कूलों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इन शालाओं में करीब एक लाख बच्चे नामांकित है। प्रदेश में ड्रॉप-आउट बच्चों की संख्या दर कम करने के लिए स्कूलों में नामांकन बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। स्कूल शिक्षा मंत्री ने केन्द्रीय मंत्री को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के बारे में भी जानकारी दी।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका पदों के लिए 2.70 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं आंगनवाड़ी सहायिका के रिक्त पदों की पूर्ति के लिये जारी की गई ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया को अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिल रही है। विभाग द्वारा 19 जून को जारी विज्ञापन के तहत कुल 19,504 पदों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है, जिसमें अब तक 2,70,152 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। भर्ती प्रक्रिया में दस संभागों से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के लिए 55,730 और आंगनवाड़ी सहायिका के लिए 2,14,422 आवेदन प्राप्त हुए हैं।

आवेदन प्रक्रिया की अंतिम तिथि 4 जुलाई निर्धारित की गई है, जबकि भरे गए आवेदन में सुधार की अंतिम तिथि 7 जुलाई है।

उल्लेखनीय है कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका के कुल 19 हज़ार 504 पदों की पूर्ति के लिए इंदौर संभाग से सबसे अधिक 47 हज़ार 116 आवेदन प्राप्त हुए हैं जिन में 38 हज़ार 601 सहायिका के पद और 8 हज़ार 515 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के पद के लिए आवेदन प्राप्त हुए है। जबलपुर संभाग से कुल 44 हजार 258 आवेदन में से 34 हजार 317 सहायिका के और 9 हजार 941 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के आवेदन प्राप्त हुए है। सागर संभाग से 33 हज़ार 513 में से सहायिकाओं के पद के लिए 27 हज़ार 857 और कार्यकर्ता के लिए 5 हज़ार 656 आवेदन आए है।

भोपाल में कुल 28 हज़ार 850 आवेदन प्राप्त हुए है। इनमें सहायिका के पद के लिए 22 हजार 397 और कार्यकर्ता के लिए 6 हज़ार 453 आवेदन प्राप्त हुए है। इसी प्रकार रीवा से 28 हज़ार 519 कुल आवेदन प्राप्त हुए है, जिनमें 23 हज़ार 831 आवेदन सहायिका के और 4 हज़ार 688 आवेदन कार्यकर्ता के लिए प्राप्त हुए है। ग्वालियर संभाग के 28 हज़ार 413 आवेदनों में सहायिका के 22 हज़ार 73 और कार्यकर्ताओं के 6 हज़ार 340 आवेदन प्राप्त हुए है।

अंतर्राष्ट्रीय बाघ तस्कर को 5 वर्ष की सजा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर प्रदेश में वन एवं वन्य-जीव संरक्षण के लिये किये जा रहे समग्र प्रयासों के अंतर्गत वन विभाग की स्टेट टाइगर फोर्स भोपाल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बाघ तस्कर ताशी शेरपा, जो मूल रूप से तिब्बत का निवासी है, जिसे 9 साल की कड़ी मेहनत के बाद 25 जनवरी, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय सीमा भारत-नेपाल के पास सिलीगुड़ी पश्चिम बंगाल से गिरफ्तार किया गया था। स्टेट टाइगर फोर्स द्वारा की गयी सटीक विवेचना एवं न्यायालय में रखे गये ठोस पक्ष के आधार पर आरोपी शेरपा को 9 मई, 2025 को 5 वर्ष की सजा दी गयी।

इंटरपोल मुख्यालय ल्योन, फ्रांस से जारी पत्र में मध्यप्रदेश वन विभाग की स्टेट टाइगर फोर्स को अंतर्राष्ट्रीय बाघ तस्कर ताशी शेरपा के सफलतापूर्वक अभियोजन पूर्ण कर सजा दिलवाने की उत्कृष्ट कार्रवाई के लिये बधाई-पत्र भेजा है। इंटरपोल जिसे आधिकारिक तौर पर अंतर्राष्ट्रीय अपराधी नियंत्रण पुलिस संगठन कहा

जाता है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो 195 से अधिक देशों ने मिलकर बनाया है। यह पूरे विश्व में पुलिस एवं अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सहयोग और अपराध नियंत्रण की सुविधा प्रदान करता है।

मध्यप्रदेश वन विभाग ने स्टेट टाइगर फोर्स का गठन केन्द्र शासन के निर्देश पर वन्य-जीवों की तस्करी की रोकथाम के लिये किया है। स्टेट टाइगर फोर्स ने विगत कुछ वर्षों में उत्कृष्ट कार्य करते हुए अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया है। इससे पहले भी इंटरपोल द्वारा 3 बार एसटीएसएफ के कार्यों की सराहना की जा चुकी है। अपराधी ताशी शेरपा अंतर्राष्ट्रीय बाघ तस्करी गिरोह की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसका नेटवर्क भारत, नेपाल, भूटान और चीन तक फैला हुआ है। जुलाई-2024 में सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली ने मामले की गंभीरता को देखते हुए ताशी शेरपा की जमानत याचिका को खारिज कर ट्रॉयल कोर्ट नर्मदापुरम को एक वर्ष के भीतर ट्रॉयल पूरा करने का निर्देश दिया था। स्टेट टाइगर फोर्स ने वैज्ञानिक विवेचना करते हुए ताशी शेरपा की ब्रेन-मेपिंग और पॉलीग्राफी परीक्षण करवाया, जिससे उसके विरुद्ध महत्वपूर्ण सबूत मिले। इसके अतिरिक्त साइबर डेटा भी एकत्र कर न्यायालय में महत्वपूर्ण साक्ष्य के रूप में पेश किये गये।

देश का यह पहला मामला है, जिसमें बाघ शिकारियों, कुरियर, बिचौलियों और तस्करों सहित 28 अपराधियों के गिरोह को गिरफ्तार किया गया, जिसमें सभी दोषी ठहराये गये।

लोकपथ मोबाइल ऐप की सफलता की प्रथम वर्षगांठ पर मंत्री श्री सिंह ने दी बधाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के लोक निर्माण विभाग द्वारा विकसित लोकपथ मोबाइल ऐप ने अपनी पहली वर्षगांठ के साथ एक सराहनीय उपलब्धि दर्ज की है। बुधवार को लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह की अध्यक्षता में इस अवसर पर समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें ऐप के अब तक की सफलता, नागरिकों की भागीदारी और आगामी लक्ष्यों पर विस्तार से चर्चा की गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा लोकपथ ऐप की शुरुआत विधानसभा परिसर में की गई थी। ऐप ने अपने पहले ही वर्ष में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। अब तक इस ऐप पर 7800 से अधिक शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें से 95 प्रतिशत से अधिक का त्वरित समाधान कर दिया गया है। लगभग 1.5 लाख नागरिकों द्वारा ऐप को डाउनलोड किया जाना यह दर्शाता है कि जनता में इसकी उपयोगिता और विश्वसनीयता को लेकर गहरी स्वीकार्यता बनी है।

ऐप की सफलता पर मंत्री श्री सिंह ने विभागीय अधिकारियों को बधाई देते हुए लोकपथ ऐप को जनभागीदारी आधारित डिजिटल गवर्नेंस का प्रभावी उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्ष में ऐप के 5 लाख डाउनलोड सुनिश्चित करने का लक्ष्य है, जिसके लिए व्यापक जनजागरण और प्रचार-प्रसार अभियान चलाया जाएगा। लोकपथ ऐप को राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली जब 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे प्रतिष्ठित कार्यक्रम में अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन ने इससे संबंधित प्रश्न प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश का यह नवाचार अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बन चुका है। मंत्री श्री राकेश सिंह ने बैठक में नागरिकों को और अधिक त्वरित सेवा देने के लिए नियमित समीक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें संवेदनशीलता के साथ शिकायतों का निराकरण करना चाहिए। यदि समय सीमा में सड़क की मरम्मत करना संभव नहीं है तो संबंधित शिकायतकर्ता को दूरभाष पर कारण बताते हुए सुधार में लगने वाले समय की जानकारी देना चाहिए। उन्होंने प्रमुख अभियंताओं को साप्ताहिक समीक्षा अनिवार्य रूप से करने तथा लंबित शिकायतों को लेकर लापरवाह अधिकारियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए कहा। मंत्री श्री सिंह ने सभी परिक्षेत्रीय मुख्य अभियंताओं के कार्यालयों में एक-एक नोडल अधिकारी को नियुक्ति करने के निर्देश देते हुए उन्हें भोपाल में विशेष प्रशिक्षण देने की बात कही। साथ ही, ऐप से जुड़ी गूगल प्ले स्टोर टिप्पणियों पर विभागीय उत्तर देने की प्रक्रिया आरंभ करने की सिफारिश भी की गई, जिससे नागरिकों का विश्वास और अधिक मजबूत हो सके।

एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023-24 में मध्यप्रदेश को फंट रनर स्टेट का दर्जा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सतत विकास के लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर क्रियान्वित करने में मध्यप्रदेश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। इसी क्रम में सतत विकास लक्ष्यों के क्रियान्वयन में निजी उद्योग की भूमिका और सहभागिता को बढ़ाने के लिए भारत जर्मन सहयोग परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग द्वारा विशेषज्ञों की राष्ट्रीय कार्यशाला भोपाल के कोर्टयार्ड बाय मैरियट भोपाल में 3 जुलाई को सुबह दस बजे से आयोजित की गई है। कार्यशाला में मध्यप्रदेश के विभिन्न विभाग, जिलों के प्रतिनिधियों, नीति आयोग, जर्मनी की संस्था जीआईजेड के प्रतिनिधियों से सतत विकास के लक्ष्यों और उनके स्थानीयकरण के मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। मध्यप्रदेश उन राज्यों में से एक है जहां सतत विकास के लक्ष्यों के स्थानीयकरण में तेजी आई है और एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023-24 में मध्यप्रदेश को फ्रंट रनर स्टेट का दर्जा मिला। प्रदेश में उत्पादन और जिम्मेदार पूर्ण उपभोग, स्वच्छ ऊर्जा, टिकाऊ स्वच्छता, शहरीकरण, गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में मध्यप्रदेश में उल्लेखनीय काम हुआ है। मध्यप्रदेश के प्रयासों से 2.30 करोड़ व्यक्ति बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं। सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करते हुए मध्यप्रदेश में खाद्य सुरक्षा के लिए मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना, स्वास्थ्य सुरक्षा हासिल करने के लिए आयुष्मान भारत और स्वच्छ भारत के प्रावधान के लिए जल जीवन मिशन में उल्लेखनीय काम हुआ है। मध्यप्रदेश देश के उन पहले राज्यों में से एक है जिसने भोपाल शहर के लिए स्वैच्छिक स्थानीय समीक्षा की और इंदौर नगर निगम में ग्रीन म्युनिसिपल बांड के माध्यम से वित्त जुटाने में अग्रणी भूमिका निभाई।

कार्यशाला में जर्मन दूतावास और यूएनडीपी के प्रतिनिधि, भारत जर्मन सहयोग परियोजना की प्रमुख श्रीमती हेनरी पेईचर्ट, नीति आयोग के वरिष्ठ सलाहकार श्री राजीव कुमार सेन और सतत विकास लक्षण के क्रियान्वयन से जुड़े विषय विशेषज्ञ, आर्थिक सलाहकार, कॉर्पोरेट भागीदारी से जुड़े विशेषज्ञ शामिल होंगे।

शहडोल सांसद ने अपनी बेटी का एडमिशन शासकीय विद्यालय में कराया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहडोल सांसद श्रीमती हिमाद्री सिंह ने अपनी बेटी गिरीश नंदिनी सिंह का एडमिशन अनूपपुर जिले के ग्राम राजेंद्र के शासकीय प्राथमिक कन्या विद्यालय में कराया है। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने सांसद श्रीमती हिमाद्री सिंह के इस निर्णय की सराहना की। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि इस सकारात्मक संदेश से अन्य जन-प्रतिनिधियों एवं नागरिकों को प्रेरणा मिलेगी। जन-सामान्य में सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति उनका विश्वास और अधिक मजबूत होगा।

राजस्व अधिकारी रेलवे परियोजना के निर्माण कार्यों की बाधाओं का समाधान करें : कमिश्नर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने ललितपुर सिंगरौली रेलवे लाइन में सतना, रीवा, सीधी और सिंगरौली में चल रहे कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में भू अर्जन का कार्य लगभग पूरा हो गया है। न्यायालयीन प्रकरण अथवा अन्य कारणों से जो प्रकरण शेष हैं उनका भी निराकरण तेजी से करें। सभी कलेक्टर भू अर्जन प्रकरणों के निराकरण की हर सप्ताह समीक्षा करें। शासन द्वारा निर्धारित प्रक्रिया का पालन करते हुए भू अर्जन की कार्यवाही पूरी करें। भू अर्जन करते समय विस्थापित परिवारों के हितों का भी पूरा ध्यान रखें। निर्माण कार्यों के लिए जमीन प्राप्त होने के बाद रेलवे तत्काल उस पर निर्माण कार्य शुरू करे। निर्माण कार्य में देरी होने से कई तरह की कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। रीवा से बघवार तक रेलवे लाइन बिछाने का कार्य पूरा हो गया है। सीधी जिले में शेष क्षेत्र में लाइन बिछाने का कार्य तेजी से करें।

कमिश्नर ने कहा कि मुआवजा वितरण के बाद भी यदि निर्माण कार्यों में कोई बाधा डालता है तो राजस्व अधिकारी मौके पर जाकर उसका निराकरण करें। रेलवे के अधिकारी तथा राजस्व अधिकारी समन्वय के साथ परियोजना के निर्माण कार्यों को पूरा कराएं। सीधी जिले के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि जो प्रकरण न्यायालय में दर्ज हैं उन्हें लोक अदालत के माध्यम से निराकृत करने का प्रयास करें। भू अर्जन से प्रभावितों से सतत संपर्क करके लंबित प्रकरणों का निराकरण कराएं। राजस्व अधिकारियों ने भू अर्जन में बहुत अच्छा कार्य किया है। रीवा से देवसर तक रेलवे लाइन निर्माण की सभी बाधाएं दूर हो गई हैं। रेलवे तेजी से निर्माण कार्य पूरे करे। कलेक्टर सीधी तीन स्थानों पर आ रही कठिनाईयों को एक सप्ताह में दूर कराएं। कमिश्नर ने सतना जिले के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि रीवा-सतना रेलवे लाइन के दोहरीकरण में शेष बचे 19 किलोमीटर भाग में भू अर्जन की कार्यवाही एक माह में पूरा करें। जिनमें अवार्ड पारित हो गया है उनमें सात दिन में मुआवजा राशि का वितरण कराएं। ग्राम तपाकोठार में एसडीएम रामपुर बघेलान मौके पर जाकर सीमांकन करा दें। नागौद तहसील में लंबित 8 गांवों के भू अर्जन के प्रकरणों की सभी बाधाएं एक माह में दूर करें। सभी राजस्व अधिकारी रेल परियोजना से जुड़े प्रकरणों पर विशेष ध्यान दें। ग्राम सड़वा, गंगवरिया और विकरा में भू अर्जन की कार्यवाही तत्परता से करें। कमिश्नर ने सिंगरौली जिले के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कहा कि पूरी पारदर्शिता के साथ भू अर्जन के प्रकरणों का निराकरण करें।

बैठक में कलेक्टर सीधी स्वरोचिष सोमवंशी ने बताया कि भू अर्जन के कारण रेलवे निर्माण कार्य में कहीं भी बाधा नहीं है। भू अर्जन से जुड़े प्रकरणों पर तत्परता से कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर ने ग्राम झांझ, रायखोर, पड़खुरी पवाई, पटेहरा, हर्दिहा पवाई, झलवार, ममदर, रघुनाथपुर, कोतरकला, नौढ़िया, मधुरी कोठार सहित विभिन्न ग्रामों के भू अर्जन की ग्रामवार जानकारी दी। बैठक में कलेक्टर सिंगरौली चन्द्रशेखर शुक्ला ने बताया कि चितरंगी तहसील तथा देवसर तहसील में तैयार मुआवजा प्रकरणों पर तत्परता से कार्यवाही की जा रही है। ग्राम मऊ और जियावन के शेष प्रकरण एक माह में निराकृत कर दिए जाएंगे। कुशियारी में भूमि विवाद निराकृत करके मुआवजा राशि का वितरण कर दिया गया है। बैठक में कलेक्टर रीवा प्रतिभा पाल, कलेक्टर सतना सतीश कुमार एस, कलेक्टर मैहर रानी बाटड, पुलिस अधीक्षक रीवा विवेक सिंह, संबंधित जिलों के एसडीएम, रेलवे के अधिकारी जीएस मीणा, सुनील प्रजापति, आरके स्वाई, इन्द्रजीत वर्मा तथा मानसिंह मीणा उपस्थित रहे।

विधायक ने रघुराजगढ़ में शुरू की नि:शुल्क स्कूल बस सेवा

विद्यालय को मिले जनरेटर, पुस्तकें और विज्ञान यंत्र

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले की देवतालाब विधानसभा क्षेत्र के रघुराजगढ़ स्थित स्व. मोहन सिंह गहरवार हायर सेकेंडरी स्कूल (सीएम राइजिंग विद्यालय) में शिक्षा और पर्यावरण के क्षेत्र में एक नई पहल की शुरुआत हुई। क्षेत्रीय विधायक एवं मध्यप्रदेश के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम ने भारी बारिश के बावजूद समय पर पहुंचकर निःशुल्क स्कूल बस सेवा का शुभारंभ किया। उन्होंने विद्यालय परिसर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत वृक्षारोपण भी किया और छात्रों को भविष्य के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम में गौतम ने विद्यार्थियों से संवाद किया और कक्षा 10 में 100% तथा कक्षा 12 में 80% परीक्षा परिणाम की सराहना की। उन्होंने ग्रामीण छात्रों को शहरों जैसी सुविधाएं देने के लिए तीन महत्वपूर्ण संसाधनों की घोषणा की, जिसमें विज्ञान प्रयोगशाला के लिए अत्याधुनिक यंत्र, पुस्तकालय के लिए उपयोगी पुस्तकें और नियमित बिजली आपूर्ति के लिए हाई-पावर जनरेटर शामिल हैं।

इन संसाधनों से ग्रामीण छात्रों को बेहतर शैक्षणिक अवसर मिलेंगे। गौतम ने कहा, "ग्रामीण बच्चों को भी वही अवसर मिलने चाहिए जो महानगरों के बच्चों को मिलते हैं। यह बस, पुस्तकें और जनरेटर भविष्य की नींव हैं।" उन्होंने वृक्षारोपण को मातृ और प्रकृति प्रेम का प्रतीक बताते हुए कहा, "एक वृक्ष एक पीढ़ी का जीवन है, जो कल की सांस बनेगा।"कार्यक्रम में प्राचार्य, शिक्षकगण और स्टाफ ने विधायक का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। स्कूल प्रांगण में भारी जनसमूह उमड़ा, जिसमें मंडल अध्यक्ष लवकुश सिंह, पुष्पेंद्र गौतम, मन्नूलाल गुप्ता, उपाध्यक्ष चंद्रभान साहू, मंत्री श्रीनिवास साकेत, संयोजक देवेंद्र सिंह, राजेश शुक्ला, नावेंद्र पाण्डेय, रमेश पटेल, संतोष मिश्रा, धनेश तिवारी, विश्राम यादव, मोहन कुशवाहा, अरुण दुबे, शिवराज कॉल, जगदीश पटेल, रामचरण प्रजापति सहित कई जनप्रतिनिधि और नागरिक मौजूद रहे।

डिप्टी सीएम ने प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के हितग्राहियों को हितलाभ का किया वितरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना के तहत हितग्राहियों को प्रथम किश्त वितरण का कार्यक्रम नगर निगम के टाउन हाल में आयोजित किया गया। हितग्राहियों को ऋण राशि वितरण करते हुए उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना गरीबों के लिये पक्के आवास देने का वरदान है। इसके माध्यम से देश में 4 करोड़ पक्के आवास लोगों को मिल चुके हैं आने वाले समय में 3 करोड़ मकान गरीबों को दिये जायेंगे। उप मुख्यमंत्री ने रीवा शहर के आवास योजना के 224 हितग्राहियों को आवास की एक लाख रूपये की प्रथम किश्त की स्वीकृति पत्र सौंपे।

प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के तहत प्रदेश के 65 हजार से अधिक हितग्राहियों को 1626 करोड़ रूपये की राशि प्रदान की गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर से हितग्राहियों को राशि का वितरण किया। कार्यक्रम का संजीव प्रसारण नगर निगम टाउन हाल में आयोजित कार्यक्रम में दिखाया गया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस महत्वाकां योजना से रीवा में एएसपी के तहत 1736 आवास तैयार किये जा चुके हैं। इसी प्रकार पूर्व में 4198 आवास पूर्ण हो गये हैं तथा 224 हितग्राहियों को प्रथम किश्त के तौर पर एक लाख रूपये की राशि प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी का संकल्प है कि कोई भी गरीब बच्चे आवास में न रहे। उनकी संकल्पना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से प्रदेश व जिले में भी गरीबों को पक्के आवास प्रदान किये जा रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार गरीबों, युवाओं, किसानों व महिलाओं के कल्याण के लिये कृत संकल्पित है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल ने कहा कि देश व प्रदेश में प्रधानमंत्री जी की मंशानुरूप पक्के गरीबों के हित में कल्याणकारी योजनाओं के संचालन के लिये मुख्यमंत्री जी को साधुवाद दिया। अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय ने कहा कि रीवा शहर में गरीबों को पक्के आवास दिलाये जा रहे हैं।

एसपी और एडीएम ने दुर्घटना संभावित स्थलों का किया निरीक्षण

सड़कों में सुधार तथा स्पीड ब्रोकर बनाने का कार्य तत्काल करें - पुलिस अधीक्षक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश पर रीवा शहर के चोरहटा थाना क्षेत्र में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अधिकारी द्वारा मौके पर निरीक्षण किया गया। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह तथा एडीएम सपना त्रिपाठी ने रेलवे ओवर ब्रिज गोड़हर से अगडाल तक सड़क दुर्घटना के संभावित स्थलों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने बायपास जंक्शन, चन्द्रलोक होटल के पास, निर्मल सिटी मोड़, एयरपोर्ट मोड़ तथा अन्य स्थलों का निरीक्षण किया। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि बायपास जंक्शन में सड़क का सुधार तत्काल कराएं। इसमें प्रयागराज मार्ग से आने वाले वाहनों की गति को नियंत्रित करने के लिए स्पीड ब्रेकर तत्काल लगा दें। वाहनों के शहर की ओर मुड़ते समय सामने से तेज गाति से वाहन आने पर दुर्घटनाएं होती हैं। बायपास मार्ग और चोरहटा से रतहरा मार्ग में शहर के बाहरी क्षेत्र में जहाँ मुख्य सड़क पर कालोनियाँ के गेट हैं वहाँ भी स्पीड ब्रेकर बनाना आवश्यक है। सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए वाहन चालकों को सचेत करने के साथ-साथ सुरक्षा के सभी उपाय करें। निरीक्षण के समय एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, एसडीओपी, प्रभारी यातायात, तहसीलदार शिवशंकर शुक्ला, थाना प्रभारी चोरहटा विकास मिश्रा, कार्यपालन यंत्री पीडब्ल्यूडी नितिन पटेल तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

ब्रह्मीपुर में नवनिर्मित सामुदायिक भवन का किया गया लोकार्पण

जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह ने किया उद्घाटन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। ग्राम पंचायत ब्रह्मीपुर में 15वें वित्त आयोग की राशि से निर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह ने किया। यह भवन बजरंगबली मंदिर परिसर में स्थित है, जो पडरी, बंगीपुरवा और तीन अन्य पंचायत क्षेत्रों के लिए सिद्ध आश्रम के रूप में प्रसिद्ध है। क्षेत्रवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करते हुए जिला पंचायत ने इस भवन का निर्माण कराया।लोकार्पण कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह, बरौंधा मंडल अध्यक्ष कामता प्रसाद यादव, ग्राम पंचायत सरपंच सुनील सिंह, सचिव भार्गव प्रसाद विश्वकर्मा, द्वारका प्रसाद यादव, रोजगार सहायक राम लखन यादव सहित आशु सिंह (ब्रह्मीपुर), शुभम द्विवेदी (पडरी), भारत पाल, गुड्डन सिंह, अनिल श्रीवास्तव, महेंद्र सिंह और रमैया पंडित उपस्थित रहे। सैकड़ों ग्रामीणों ने भी इस अवसर पर शिरकत की।

कार्यक्रम में बजरंगबली मंदिर के पुजारी रमैया जी को श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरु के नाम समर्पित वृक्षारोपण भी किया गया। लोकार्पण के बाद मंदिर परिसर में कन्या पूजन और विशाल भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।यह सामुदायिक भवन क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों के लिए महत्वपूर्ण केंद्र साबित होगा, जिससे ग्रामीणों की सुसंगत मांग पूरी हुई है।

फीडर सेपरेशन और नए विद्युत सब स्टेशन का निर्माण तय समय सीमा में करें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में कहा कि विद्युत व्यवस्था में सुधार के लिए कई परियोजनाओं में कार्य किया जा रहा है। फीडर सेपरेशन तथा नए विद्युत सब स्टेशन के निर्माण का कार्य तय समय सीमा में पूरा करें। शहर में पीटीएस चौराहा तथा चोरहटा में दो नए सब स्टेशन का निर्माण पूरा होने से विद्युत व्यवस्था बेहतर हुई है। शहर में कई स्थानों में विद्युत पोल क्षतिग्रस्त हो गए हैं। इन्हें तत्काल बदलें। इनसे कभी भी गंभीर दुर्घटना हो सकती है। शहर में बिजली की ट्रिपिंग को रोकने के लिए भी प्रभावी उपाय करें। कई बिजली उपभोक्ताओं द्वारा मीटर की जाँच के नाम पर परेशान करने की शिकायतें की गई हैं। जाँच के नाम पर ईमानदार बिजली उपभोक्ताओं को परेशान न करें। यदि कोई व्यक्ति बिजली की चोरी कर रहा है तो सही मूल्यांकन करके ही जुर्माना लगाएं। ईमानदारी से बिजली का बिल भुगतान करने वालों को किसी तरह की असुविधा नहीं होनी चाहिए।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माणाधीन सिक्स लेन बायपास रोड से बिजली लाइनों की तत्काल शिफ्टिंग कराएं। प्रस्तावित सड़क में भूमिगत विद्युत लाइन बिछाने का कार्य प्रस्तावित करें। बैठक में अतिरिक्त मुख्य अभियंता प्रमा पाण्डेय ने बताया कि खराब विद्युत पोल बदलने के लिए एक करोड़ रुपए का प्रस्ताव भेजा गया है। इसका कार्य शीघ्र शुरू किया जाएगा। विद्युत सब स्टेशन स्थापित करने का कार्य पूरा हो गया है। खराब ट्रांसफार्मर तय समय सीमा में बदले जा रहे हैं।

संभाग के सभी डिपो में पर्याप्त संख्या में ट्रांसफार्मर उपलब्ध हैं। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, अधीक्षण यंत्री बीके शुक्ला, जनप्रतिनिधिगण, अन्य अधिकारी तथा निर्माण एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बड़े देव बाबा आश्रम में भव्य गुरु पूर्णिमा महोत्सव का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर बड़े देव बाबा आश्रम, बरौंधा में भव्य गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन हुआ। आश्रम में भक्तों का जनसैलाब उमड़ा। कार्यक्रम में भक्तों ने आश्रम के महंत भागवत भास्कर आचार्य डॉ. विपिन कृष्ण महाराज का पूजन किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। महाराज ने अपने उद्बोधन में उपस्थित भक्तों के कल्याण और जीवन मंगल की कामना की। इसके बाद आश्रम में आयोजित भंडारे में सभी भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह, वरिष्ठ कांग्रेस नेता आशुतोष द्विवेदी, डिप्टी रेंजर अनुराग सिंह (पिंडरा), पटवारी रामनरेश पटेल (मझगवां), सोनू सिंह (पिंडरा), रामकेश यादव (गोपालपुर), भारत पाल (झरी), बंगड़ यादव (गोपालपुर), रामबदन विश्वकर्मा, छोटा मिस्त्री (कालिंजर), मिहीलाल (कालिंजर), विराट मेडिकल (कालिंजर), अंगद तिवारी (नरैनी), चंदा सेन (बरौंधा), कामना गौतम (बरौंधा), गीता गौतम (बरौंधा), कमलाकांत (अमिलिहा), दादूराम सिंगरौल (लोधनपुरवा), संध्या राजेश शिवहरे (सतना), अवधलाल सरपंच (जवारिन), शिवराम यादव, संतोष दास सहित सैकड़ों भक्त उपस्थित रहे।यह आयोजन आश्रम की आध्यात्मिकता और भक्ति के प्रति समर्पण का प्रतीक बना, जिसमें भक्तों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजस्व अधिकारी नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन पर विशेष ध्यान दें - कमिश्नर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित संभागीय बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने राजस्व कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी राजस्व अधिकारी अपने कार्यक्षेत्र में कानून और व्यवस्था की निगरानी के साथ राजस्व कार्यों पर विशेष ध्यान दें। नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन के प्रकरणों का सर्वोच्च प्राथमिकता से निराकरण करें। निर्धारित दिवस में राजस्व न्यायालय में अनिवार्य रूप से बैठकर प्रकरणों की सुनवाई करें। लंबित प्रकरणों में 50 प्रतिशत से कम निराकरण होने पर कार्यवाही की जाएगी। सभी एसडीएम और तहसीलदार पाँच वर्ष से अधिक समय से लंबित प्रकरणों का 31 अगस्त तक अनिवार्य रूप से निराकरण करें। संभाग में राजस्व प्रकरणों के निराकरण में सिंगरौली जिले ने सबसे अच्छा प्रयास किया है। रीवा जिले में संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक प्रकरणों का निराकरण हुआ है। मऊगंज और सीधी जिलों के कलेक्टर राजस्व प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा करके स्थिति में सुधार लाएं। नवगठित मऊगंज जिले में भी राजस्व प्रकरणों का निराकरण अच्छा हुआ है। आरसीएमएस पोर्टल तथा सीएम हेल्पलाइन में कोई भी जिला रैंकिंग में 30 से नीचे न जाए, इसके लिए सतत प्रयास करें।

कमिश्नर ने कहा कि सीमांकन और नामांतरण के प्रकरणों का निराकरण 80 प्रतिशत से अधिक होना सुनिश्चित करें। अनावश्यक पेशी देकर प्रकरण लंबित न रखें। अविवादित नामांतरण तथा बंटवारा के प्रकरण तत्काल निराकृत कराएं। सभी निराकृत प्रकरणों को आरसीएमएस पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज करें। एसडीएम मऊगंज, त्योंथर तथा मझौली प्रकरणों के निराकरण में तेजी लाएं। कलेक्टर मऊगंज राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिए विशेष प्रयास करें। अच्छे कार्य करने वाले राजस्व अधिकारियों को आगामी स्वतंत्रता दिवस में सम्मानित करें। राजस्व प्रकरणों के बड़ी संख्या में लंबित रहने के कारण ही संभाग में सीएम हेल्पलाइन में राजस्व विभाग में शिकायतों की संख्या अधिक है। इसमें 50 दिन से अधिक समय से लंबित सभी शिकायतों का तत्परता से निराकरण कराएं।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि एसडीएम और तहसीलदार भू राजस्व की वसूली पर भी ध्यान दें। आरआरसी की वसूली के लिए भी अभियान चलाएं। इस वर्ष जून माह से ही अच्छी बारिश हो रही है। बाढ़ से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों का चिन्हांकन करके राहत और बचाव के लिए समुचित प्रबंध करें। जिला स्तरीय कंट्रोल रूम के माध्यम से नदियों और बांधों के जल स्तर पर निगरानी रखें। कंट्रोल रूम को 24 घंटे सक्रिय रखें। जुलाई और अगस्त माह में कई त्यौहार और पर्व होंगे। इनमें कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए समुचित प्रबंध करें। बारिश में जलप्रपातों तथा अन्य पर्यटन स्थलों में बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं।

जलप्रपातों में सुरक्षा के उचित प्रबंध करें। खतरनाक स्थलों में जाने से रोकने के लिए चेतावनी बोर्ड लगाएं। सर्पदंश, वज्रपात एवं बाढ़ से प्रभावित व्यक्तियों को राहत राशि का तत्काल भुगतान कराएं। वनाधिकार अधिनियम के शेष प्रकरणों का निर्धारित प्रक्रिया से निराकरण करते हुए पात्र व्यक्तियों को भू अधिकार पत्र जारी कराएं। स्वामित्व योजना, धारणाधिकार योजना और भू अर्जन के प्रकरणों का भी तत्परता से निराकरण करें। बैठक में कलेक्टर रीवा प्रतिभा पाल, कलेक्टर सतना सतीश कुमार एस, कलेक्टर मैहर रानी बाटड, कलेक्टर सीधी स्वरोचिष सोमवंशी, कलेक्टर सिंगरौली चन्द्रशेखर शुक्ला तथा सभी अनुभागों के एसडीएम, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त सुदेश मालवीय, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी उपस्थित रहीं।

वीवा स्पा सेंटर का भव्य शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना खेरमाई रोड स्थित त्रिमूर्ति नरसिंह होम के पास वीवा स्पा सेंटर का भव्य शुभारंभ 10 जुलाई दिन गुरुवार को मुख्य अतिथि कांग्रेस की जिला महिला प्रकोष्ठ महामंत्री हेमलता सिंह एवं प्रीति सिंह द्वारा फीता काटकर किया गया।

उक्त गरिमामई मौके पर सेंटर के संचालक शुभम सिंह एवं बृजेंद्र सिंह पुरैनी ने संयुक्त रूप से कहा कि महानगरों की तर्ज पर महिला एवं पुरुष ब्यूटी पार्लर के साथ-साथ मसाज सेंटर के रूप में अपनी सेवाओं को आम जनमानस को समर्पित किया।ज्ञात हो कि सतना की माटी में ही जन्में पले बढ़े संचालक बृजेंद्र सिंह एवं शुभम सिंह अपनी कला कौशल से मुम्बई एवं गोवा जैसी जगहों पर उत्कृष्ट सेवाएं दे चुके हैं। अब आपके अपने शहर में उनकी सेवाएं आम जनमानस को समर्पित होंगी। उपरोक्त अवसर पर प्रमुखरूप से अरुण खरे, राजू सिंह पुरैनी, वीरेंद्र सिंह, धर्मेंद्र सिंह, के के तिवारी, विमल पाल, चंदन सिंह, रुस्तम सिंह, प्रकाश सिंह के साथ सैकड़ों गणमान्य उपस्थित रहे।

विचार

क्यों नहीं पहुंच पातीं सरकारें घरों की दहलीज तक?

भारतीय राजनीति में महिलाओं के सशक्तीकरण की बातें खूब होती हैं। चुनावी घोषणापत्रों में उनके लिए वादे भी किए जाते हैं, परंतु चुनाव बीतते ही वायदों पर धूल की परत जम जाती है। शायद ही कोई जनप्रतिनिधि उनके दुख-दर्द को सुनने, उनकी अपेक्षाओं को समझने के लिए घर की दहलीज तक जाता हो? यह एक कड़वी सच्चाई है जिसे देश के अधिकांश राज्यों में महिलाओं ने जिया है। लेकिन तारीफ करनी होगी बिहार की जिसने इस परिपाटी को तोड़कर एक नई मिसाल कायम की है। एक ऐसा प्रदेश, जिसने दशकों तक महिलाओं को पुरुषों के निर्देशों पर मताधिकार का प्रयोग करते देखा, आज वही महिला सशक्तीकरण की एक ऐसी नई इबारत लिख रहा है, जो देश के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बन चुकी है। इस परिवर्तनकारी यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव %महिला संवाद% कार्यक्रम है, जिसे विगत 18 अप्रैल से प्रदेश में ग्राम स्तर पर शुरू किया गया। यह पहल केवल एक सरकारी कवायद नहीं, बल्कि महिलाओं को केंद्र में रखकर सामाजिक बदलाव को गति देने का एक सशक्त माध्यम है। यह कार्यक्रम प्रदेश की बेटियों, माताओं और बहनों की आवाज़ को गंभीरता से सुनने, समझने और भविष्य की नीतिगत व प्रशासनिक पहलों को आकार देने का एक महत्त्वपूर्ण मंच बन गया है। यह संतोष का विषय है कि अब तक 38 जिलों में 52,468 महिला संवाद कार्यक्रमों का सफल आयोजन हो चुका है, जिसमें कुल 1 करोड़ 13 लाख से अधिक महिलाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। यह संख्या इस बात का भी जीवंत प्रमाण है कि प्रदेश की महिलाएं अब अपनी आवाज उठाने और सरकार से सीधे जुड़ने को लेकर कितनी उत्सुक और जागरूक हैं। दरभंगा से लेकर पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, पश्चिमी चंपारण, गया, पूर्णिया, समस्तीपुर, नालंदा और वैशाली तक, हर जगह महिलाओं ने बेबाकी से अपनी बात रखी है। उन्होंने नीति-निर्माताओं को यह समझने का अवसर दिया है कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में आगे किन प्राथमिकताओं के साथ कदम बढ़ाए जाएं। महिला संवाद की यह पृष्ठभूमि आकस्मिक नहीं है। नीतीश कुमार के कार्यकाल को ध्यान से देखें तो पता चलता है कि सबसे पहले, लड़कियों में शिक्षा की अलख जगाने पर ज़ोर दिया गया। जहां वर्ष 2000 के आसपास बिहार में लड़कियाँ सरकारी स्कूलों में कम जाती थीं, वहीं वर्ष 2006 में मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना की शुरुआत ने क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। इस योजना ने लड़कियों को शिक्षा के लिए प्रेरित किया, जिससे वे दूर-दराज के गांवों से भी साइकिल चलाकर स्कूल पहुंचने लगीं। इसकी सफलता ने देश के अन्य राज्यों को भी इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षा के साथ-साथ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकारी नौकरियों में भी ऐतिहासिक कदम उठाए गए। वर्ष 2013 से पुलिस भर्ती में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। 2016 से सभी प्रकार की सरकारी नियुक्तियों में महिलाओं को 35 प्रतिशत का आरक्षण दिया जा रहा है, और प्राथमिक शिक्षक नियोजन में तो 50 प्रतिशत आरक्षण देकर उन्हें सशक्त किया गया है। महिलाओं के सशक्तीकरण और गरीबी उन्मूलन में जीविका स्वयं सहायता समूह का गठन भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्ष 2006 में विश्व बैंक से ऋण लेकर शुरू की गई जीविका ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक उन्नति के लिए वरदान साबित हुई है। मुख्यमंत्री द्वारा इन महिलाओं को दिया गया जीविका दीदी नाम आज एक पहचान बन चुका है। वर्तमान में, बिहार में 10 लाख 64 हजार स्वयं सहायता समूह काम कर रहे हैं, जिनसे 1 करोड़ 35 लाख से अधिक जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं। जीविका से जुड़कर ये महिलाएं लघु उद्योगों और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित कर अपने और अपने समुदाय के जीवन स्तर में सुधार ला रही हैं। महिला संवाद कार्यक्रम में प्रदेश की महिलाओं ने कई महत्त्वपूर्ण और व्यवहारिक मांगें रखी हैं, जो उनकी दूरदृष्टि और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं। उनकी सबसे प्रमुख मांग स्वरोजगार से जुड़ी है, जिसमें स्वयं सहायता समूहों के लिए सस्ते ब्याज दरों पर ऋण और जीविका दीदी की रसोई व जीविका दीदी हाट जैसी पहल शामिल हैं।

पीएम मोदी की अफ्रीकी व दक्षिण अमेरिकी देशों की यात्रा से ग्लोबल साउथ को मिलेगी मजबूती, भारत की वैश्विक धमक बढ़ेगी

कमलेश पांडे

जब वैश्विक पटल पर अमेरिका और चीन एक दूसरे पर पलटवार करने के लिए रूस के मित्र भारत को अपने-अपने खेमे में मिलाने के लिए तरह-तरह की भारत विरोधी चालें चल रहे हैं, वहीं भारत अपनी सधी चाल से रूस को भी हैरत में डालते हुए ग्लोबल साउथ यानी तीसरी दुनिया के देशों पर निरंतर अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा है। इसलिए पीएम नरेंद्र मोदी विगत 11 वर्षों से लगातार वैश्विक यात्रा कर रहे हैं और भारत की वैश्विक स्थिति को काफी मजबूती प्रदान कर चुके हैं। उनकी कोशिश है कि भारत दुनिया के गुटनिरपेक्ष देशों को एक सशक्त नेतृत्व प्रदान करे और अपने साथ साथ सभी देशों का आशातीत विकास करे।

इससे सत्य व अहिंसा की वैश्विक भावना को भी मजबूती मिलेगी। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने 9 दिवसीय विदेश दौरे पर 2 जुलाई को घाना की राजधानी अकरा के लिए रवाना हो गए। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य भी भारत के वैश्विक साझेदारी को ग्लोबल साउथ और अटलांटिक के दोनों पक्षों के साथ संबंधों को मजबूत करना है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री की इस यात्रा में घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया का दौरा शामिल हैं। पीएम मोदी ने इन देशों को भारत की विदेश नीति के लिए महत्वपूर्ण साझेदार बताया, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और बहुपक्षीय सहयोग से जुड़े हैं। अपने इस विदेश यात्रा के दौरान पीएम मोदी अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के कई देशों की यात्रा करेंगे, जिसके अपने वैश्विक मायने हैं। इसके अलावा वह ब्राजील की मेजबानी में हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भी शामिल होंगे, जहां वह ग्लोबल साउथ से जुड़े मुद्दों को उठाएंगे। स्पष्ट है कि उनकी यह यात्रा ग्लोबल साउथ में भारत की धमक बढ़ाएगी। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अफ्रीकी देश घाना की पहली द्विपक्षीय यात्रा की शुरुआत 2-3 जुलाई को की। वह पिछले तीन दशक में यहां आने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति जॉन ड्रामानी महामा के निमंत्रण पर मैं 2-3 जुलाई को घाना का दौरा करूंगा।

घाना ग्लोबल साउथ में एक मूल्यवान साझेदार है और अफ्रीकी संघ और पश्चिम अफ्रीकी राज्यों के आर्थिक समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने निवेश, ऊर्जा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और विकास साझेदारी जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने की उम्मीद जताई। उन्होंने कहा कि घाना की संसद में बोलना मेरे लिए सम्मान की बात होगी। बता दें कि घाना के राष्ट्रपति जान महामा 2015 में इंडिया-अफ्रीका फोरम समिट के लिए भारत आए थे। वह जनवरी 2025 में तीसरी बार राष्ट्रपति चुने गए हैं। चूंकि घाना भारत को बड़े पैमाने पर वस्तुओं का निर्यात करता है और पश्चिम अफ्रीका की सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं में से वह एक है। लिहाजा दोनों देश व्यापार और निवेश बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। घाना से भारत के आयात में 70 प्रतिशत हिस्सेदारी गोल्ड की है। प्रधानमंत्री मोदी महामा के साथ द्विपक्षीय भागीदारी की समीक्षा करने के साथ ही आर्थिक, ऊर्जा, रक्षा और विकास सहयोग के जरिये इसे और मजबूत बनाने के तौर-तरीकों पर बात करेंगे।

वहीं, 3-4 जुलाई को प्रधानमंत्री मोदी त्रिनिदाद एवं टोबैगो की यात्रा करेंगे। क्योंकि कैरिबियाई द्वीप में रहने वाले कुल प्रवासी भारतीयों में से 40-45 प्रतिशत त्रिनिदाद एवं टोबैगो में रहते हैं। प्रधानमंत्री कमला परसाद बिसेसर और राष्ट्रपति क्रिस्टिनी कार्ला कंगालू दोनों ही भारतीय मूल के हैं। लिहाजा प्रधानमंत्री के तौर पर नरेन्द्र मोदी की त्रिनिदाद एवं टोबैगों की यह पहली यात्रा होगी। पीएम मोदी ने कहा कि वह भारत के साथ गहरी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच जुड़ाव साझा करता है। उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू से मिलूंगा, जो इस साल के प्रवासी भारतीय दिवस की मुख्य अतिथि थीं और दूसरी बार कार्यभार संभालने वालीं प्रधानमंत्री कमला परसाद-बिसेसर से मुलाकात करूंगा।

उल्लेखनीय है कि प्रवासी समुदाय के लंबे समय से चले आ रहे रिश्तों को याद करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि 180 साल पहले भारतीय पहली बार त्रिनिदाद और टोबैगो पहुंचे थे। यह दौरा हमारे पुश्तैनी और रिश्तेदारी के विशेष बंधनों को नया जीवन देने का अवसर देगा। पीएम मोदी पोर्ट ऑफ स्पेन से ब्यूनस आयर्स जाएंगे, जो 57 साल में किसी भारतीय प्रधानमंत्री का अर्जेंटीना का पहला द्विपक्षीय दौरा होगा। वहीं, 1999 के बाद भारतीय पीएम की यह पहली द्विपक्षीय यात्रा भी होगी। क्योंकि पीएम मोदी ने नवंबर 2024 में गुयाना की यात्रा की थी। देखा जाए तो महज आठ माह में कैरेबियाई द्वीप की दूसरी यात्रा से इस बात का संकेत मिलता है कि भारत इस क्षेत्र को कितनी अहमियत दे रहा है। बता दें कि करीब 180 वर्ष पहले भारतीय प्रवासी यहां त्रिनिदाद एवं टोबैगो आए थे। दोनों देशों के बीच आर्थिक रिश्ते लगातार मजबूत हो रहे हैं और वित्त वर्ष 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार 34.16 करोड़ डॉलर पहुंच गया।

वहीं, 4-5 जुलाई को पीएम मोदी दक्षिणी अमेरिकी देश अर्जेंटीना की यात्रा करेंगे। गत 57 वर्ष में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। जहां वह अर्जेंटीना के राष्ट्रपति जेवियर मिलेयी से मुलाकात के दौरान रक्षा, कृषि, खनन, तेल गैस और ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की संभावनाओं पर बात करेंगे। अर्जेंटीना को लैटिन अमेरिका में एक प्रमुख आर्थिक साझेदार और जी20 में निकट सहयोगी बताते हुए उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रपति जेवियर माइली से मुलाकात का इंतजार कर रहा हूं, जिनसे मैं पिछले साल भी मिला था। हम कृषि, महत्वपूर्ण खनिज, ऊर्जा, व्यापार, पर्यटन, प्रौद्योगिकी और निवेश जैसे क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग को बढ़ाने पर ध्यान देंगे।

सनद रहे कि इससे पहले नवंबर, 2024 में ब्राजील में आयोजित जी20 समिट के दौरान दोनों नेताओं की मुलाकात हुई थी। भारत और अर्जेंटीना ने खनिज संसाधनों खास कर लीथियम के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया है। पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोतों की खपत कम करने और स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाने में लीथियम की भूमिका बेहद अहम है। अर्जेंटीना भारत के लिए सोयाबीन और सूरजमुखी तेल का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। 2024 में भारत अर्जेंटीना का पांचवां सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी और निर्यात गंतव्य था।

वहीं, 5-8 जुलाई को पीएम मोदी रियो डे जेनेरियो में ब्रिक्स समिट के दौरान ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डा सिल्वा से मुलाकात करेंगे। समिट के बाद राष्ट्रपति सिल्वा पीएम मोदी के लिए स्पेशल डिनर की मेजबानी करेंगे। ब्रिक्स समिट में पीएम मोदी वैश्विक प्रशासन के सुधारों, शांति एवं सुरक्षा, बहुपक्षीय संस्थाओं को मजबूत करने, जिम्मेदारी के साथ एआइ के इस्तेमाल, जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने के लिए जरूरी कदमों और वैश्विक स्वास्थ्य पर बात करेंगे।

भारत की ब्रिक्स में महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए पीएम मोदी ने कहा कि एक संस्थापक सदस्य के रूप में भारत ब्रिक्स को उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच मानता है। हम मिलकर एक अधिक शांतिपूर्ण, समान, न्यायपूर्ण, लोकतांत्रिक और संतुलित बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के लिए प्रयास करते हैं। उन्होंने पुष्टि की है कि वह शिखर सम्मेलन के दौरान कई विश्व नेताओं के साथ मुलाकात करेंगे। ब्राजील की यात्रा ब्रासीलिया में एक द्विपक्षीय राजकीय दौरे के साथ जारी रहेगी, जो लगभग छह दशकों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री का पहला दौरा होगा।

मध्यमवर्गीय परिवार नहीं फंसे ऋण के जाल में

प्रह्लाद सबनानी

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक ने रेपो दर में 50 आधार बिंदुओं की कमी की है। इसके साथ ही, निजी क्षेत्र के बैंकों, सरकारी क्षेत्र के बैंकों एवं क्रेडिट कार्ड कम्पनियों सहित अन्य वित्तीय संस्थानों ने भी अपने ग्राहकों को प्रदान की जा रही ऋणराशि पर लागू ब्याज दरों में कमी की घोषणा करना प्रारम्भ कर दिया है ताकि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दर में की गई कमी का लाभ शीघ्र ही भारत में ऋणदाताओं तक पहुंच सके एवं इससे अंततः देश की अर्थव्यवस्था को बल मिल सके। भारत में चूंकि अब मुद्रा स्फीति की दर नियंत्रण में आ गई है, अतः आगे आने वाले समय में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दर में और अधिक कमी की जा सकती है। इस प्रकार, बहुत सम्भव है ऋणराशि पर लागू ब्याज दरों में कमी के बाद कई नागरिक जिन्होंने पूर्व में कभी बैंकों से ऋण नहीं लिया है, वे भी ऋण लेने का प्रयास करें। बैंक से ऋण लेने से पूर्व इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि इस ऋण को चुकता करने की क्षमता भी ऋणदाता में होनी चाहिए अर्थात ऋणदाता की पर्याप्त मासिक आय होनी चाहिए ताकि बैंकों द्वारा प्रदत्त ऋण की किश्त एवं ब्याज का भुगतान पूर्व निर्धारित समय सीमा के अंदर किया जा सके। इस संदर्भ में विशेष रूप से युवा ऋणदाताओं द्वारा क्रेडिट कार्ड के उपयोग पश्चात संबंधित राशि का भुगतान समय सीमा के अंदर अवश्य करना चाहिए क्योंकि अन्यथा क्रेडिट कार्ड एजेंसी द्वारा चूक की गई राशि पर भारी मात्रा में ब्याज वसूला जाता है, जिससे युवा ऋणदाता ऋण के जाल में फंस जाते हैं।

बैंकों से लिए गए ऋण की मासिक किश्त एवं इस ऋणराशि पर ब्याज का भुगतान यदि निर्धारित समय सीमा के अंदर नहीं किया जाता है तो चूककर्ता ऋणदाता से बैंकों द्वारा दंडात्मक ब्याज की वसूली की जाती है। इसी प्रकार, कई नागरिक जो क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं एवं इस क्रेडिट कार्ड के विरुद्ध उपयोग की गई राशि का भुगतान यदि वे निर्धारित समय सीमा के अंदर नहीं कर पाते हैं तो इस राशि पर चूक किए गए क्रेडिट कार्ड धारकों से भारी भरकम ब्याज की दर से दंड वसूला जाता है। कभी कभी तो दंड की यह दर 18 प्रतिशत से 24 प्रतिशत के बीच रहती है। क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने वाले नागरिक कई बार इस उच्च ब्याज दर पर वसूली जाने वाली दंड की राशि से अनभिज्ञ रहते हैं। अतः बैंकों से ली जाने वाली ऋणराशि एवं क्रेडिट कार्ड के विरुद्ध उपयोग की जाने वाली राशि का समय पर भुगतान करने के प्रति ऋणदाताओं को सजग रहने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर यह ऋणदाताओं के हित में है कि वे बैंक से लिए जाने वाले ऋण की राशि तथा ब्याज की राशि एवं क्रेडिट कार्ड के विरुद्ध उपयोग की जाने वाली राशि का पूर्व निर्धारित एवं उचित समय सीमा के अंदर भुगतान करें क्योंकि अन्यथा की स्थिति में उस चूककर्ता नागरिक की क्रेडिट रेटिंग पर विपरीत प्रभाव पड़ता है एवं आगे आने वाले समय में उसे किसी भी वित्तीय संस्थान से ऋण प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है एवं बहुत सम्भव है कि भविष्य में उसे किसी भी वित्तीय संस्थान से ऋण प्राप्त ही न हो सके।

ऋणदाता यदि किसी प्रामाणिक कारणवश अपनी किश्त एवं ब्याज का बैंकों अथवा क्रेडिट कार्ड कम्पनी को समय पर भुगतान नहीं कर पाता है और उसका ऋण खाता यदि गैर निष्पादनकारी आस्ति में परिवर्तित हो जाता है तो इस संदर्भ में चूककर्ता ऋणदाता द्वारा बैंकों को समझौता प्रस्ताव दिए जाने का प्रावधान भी है। इस समझौता प्रस्ताव के माध्यम से चूककर्ता ऋणदाता द्वारा सम्बंधित बैंक अथवा क्रेडिट कार्ड कम्पनी को मासिक किश्त एवं ब्याज की राशि को पुनर्निर्धारित किए जाने के सम्बंध में निवेदन किया जा सकता है। परंतु, यदि ऋणदाता ऋण की पूरी राशि, ब्याज सहित, अदा करने में सक्षम नहीं है तो चूक की गई राशि में से कुछ राशि की छूट प्राप्त करने एवं शेष राशि को एकमुश्त अथवा किश्तों में अदा करने के सम्बंध में भी समझौता प्रस्ताव दे सकता है। ऋण की राशि अथवा ब्याज की राशि के सम्बंध के प्राप्त की गई छूट की राशि का रिकार्ड बनता है एवं समझौता प्रस्ताव के अंतर्गत प्राप्त छूट के चलते भविष्य में उस ऋणदाता को बैंकों से ऋण प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, इस बात का ध्यान चूककर्ता ऋणदाता को रखना चाहिए। अतः जहां तक सम्भव को ऋणदाता द्वारा समझौता प्रस्ताव से भी बचा जाना चाहिए एवं अपनी ऋण की निर्धारित किश्तों एवं ब्याज का निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत भुगतान करना ही सबसे अच्छा रास्ता अथवा विकल्प है।

भारत में तेज गति से हो रही आर्थिक प्रगति के चलते मध्यमवर्गीय नागरिकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है, जिनके द्वारा चार पहिया वाहनों, स्कूटर, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन एवं मकान आदि आस्तियों को खरीदने हेतु बैंकों अथवा अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण लिया जा रहा है। कई बार मध्यमवर्गीय परिवार एक दूसरे की देखा देखी आपस में होड़ करते हुए भी कई उत्पादों को खरीदने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं, चाहे उस उत्पाद विशेष की आवश्यकता हो अथवा नहीं। उदाहरण के लिए एक पड़ौसी ने यदि अपने चार पहिया वाहन का एकदम नया मॉडल खरीदा है तो जिस पड़ौसी के पास पूर्व में ही चार पहिया वाहन उपलब्ध है वह पुराने मॉडल के वाहन को बेचकर पड़ौसी द्वारा खरीदे गए नए मॉडल के चार पहिया वाहन को खरीदने का प्रयास करता है और बैंक के ऋण के जाल में फंस जाता है। यह नव धनाडय वर्ग यदि बैंक से लिए गए ऋण की किश्त एवं ब्याज की राशि का निर्धारित समय सीमा के अंदर भुगतान नहीं कर पाता है तो उस नागरिक विशेष के वित्तीय रिकार्ड पर धब्बा लग सकता है जिससे उसके लिए उसके शेष जीवन में बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों से पुनः ऋण लेने में कठिनाई आ सकती है। अतः बैंकों से ऋण प्राप्त करने वाले नागरिकों को ऋण की किश्त का समय पर भुगतना करना स्वयं उनके हित में हैं, ताकि भारत में तेज हो रही आर्थिक प्रगति का लाभ आगे आने वाले समय में भी समस्त नागरिक ले सकें।

विश्व जनसंख्या दिवस पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के तहत जिले भर में हुआ जागरूकता शिविर का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत सरकार की बहुप्रशंसित योजना 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण मिशन शक्ति द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के निर्देशन में विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर आज जिले की मनेन्द्रगढ़, चिरमिरी, खड़गवां और जनकपुर परियोजनाओं में जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य आमजन को बढ़ती जनसंख्या दर के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना और परिवार नियोजन, महिला शिक्षा व सशक्तिकरण के संदेश को व्यापक रूप से फैलाना था। शिविरों का आयोजन कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार तथा जिला कार्यक्रम अधिकारी आर.के. खाती के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यक्रम का समन्वय जिला मिशन समन्वयक श्रीमती तारा कुशवाहा द्वारा किया गया, जिन्होंने सभी परियोजनाओं में उत्कृष्ट संचालन और मार्गदर्शन प्रदान किया। मनेन्द्रगढ़ परियोजना में आयोजित शिविर में मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि सरजु यादव सहित मुकेश अग्रवाल, अजय जयसवाल, काशी प्रसाद, सुनैना विश्वकर्मा, सुशिला सिंह, उर्मिला जयसवाल, माया सोनकर, नीलू जयसवाल, हुसैना बेगम और शांता जयसवाल सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सेक्टर सुपरवाइजर श्रीमती सुमन सिंह की भूमिका भी सराहनीय रही। वहीं खड़गवां परियोजना में कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा विभाग के प्रतिनिधियों, जनपद सदस्यों और सरपंचों ने कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी निभाई। वहीं चिरमिरी परियोजना में महापौर श्री रामनरेश राय एवं परियोजना अधिकारी सहित स्थानीय जनसमुदाय ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। जनकपुर में विधायक प्रतिनिधि दुर्गाशंकर मिश्रा, नगर पंचायत अध्यक्ष, पार्षदगण और विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति में कार्यक्रम ने जनजागरूकता के नए आयाम स्थापित किए।

कार्यक्रम में नवा बिहान की संरक्षण अधिकारी श्रीमती नीता पांडेय, जेंडर विशेषज्ञ शैलजा गुप्ता, वित्तीय साक्षरता समन्वयक श्रीमती अनीता कुमारी साह एवं सखी वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रशासक श्रीमती प्रियंका राजवाड़े की विशेष उपस्थिति ने आयोजन को और अधिक प्रभावशाली बनाया। इन शिविरों के माध्यम से लिंगानुपात में संतुलन, महिला सशक्तिकरण, कन्या शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण और परिवार कल्याण योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों एवं शहरी जनता को दी गई ।

डीएमएफ कार्यों के भुगतान में किया गया सख्ती, अंतिम किस्त अब गुणवत्ता जांच के बाद ही

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले में कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार वित्तीय वर्ष 2024-25 से आज दिनांक तक जिला खनिज संस्थान न्यास अंतर्गत स्वीकृत निर्माण एवं अन्य सभी कार्यों की भुगतान प्रक्रिया को लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं, जिसमें समस्त विभागों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है कि वे निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे। अभी तक निर्माण कार्यों के लिए प्रथम किस्त में 40 प्रतिशत तथा द्वितीय किस्त कार्य के मूल्यांकन के आधार पर और अन्य कार्यों में विभागीय मांग पत्र के आधार पर द्वितीय किस्त का भुगतान किया जाता रहा है, किंतु यह देखा गया है कि विशेष रूप से आंगनबाड़ी एवं स्कूल भवनों जैसे निर्माण एवं मरम्मत कार्य जो मानसून पूर्व पूर्ण कर दिए जाते हैं उनकी गुणवत्ता वर्षा पश्चात ही स्पष्ट हो पाती है जिससे इस कार्यालय को लगातार शिकायतें प्राप्त हो रही हैं। इसी को दृष्टिगत रखते हुए वित्तीय वर्ष 2024-25 से स्वीकृत कार्यों के भुगतान हेतु नई प्रक्रिया लागू की जा रही है। जिसके अंतर्गत प्रथम किस्त 40 प्रतिशत की होगी। जिसमें विभाग का कार्य प्रस्ताव तकनीकी प्रतिवेदन, निरीक्षण, प्रतिवेदन स्थल का जीओ टैग फोटो, नक्शा, खसरा, प्रस्तावित स्थल विवरण कार्य का औचित्य एवं यदि निर्माण के अलावा कोई कार्य है तो उसका संपूर्ण दस्तावेज प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। द्वितीय किस्त 50 प्रतिशत की होगी। जिसमें विभागीय मांग पत्र निरीक्षण प्रतिवेदन, कार्य का गुणवत्ता प्रमाण पत्र, उपयोगिता प्रमाण पत्र, मूल्यांकन एम.बी. की प्रमाणित प्रति, कार्य का जीओ टैग फोटो तथा संबंधित कार्यालय प्रमुख जो कार्य का दैनिक लाभ लेता हो उसका सत्यापन शामिल किया जाएगा। तृतीय एवं अंतिम किस्त 10 प्रतिशत की होगी।

जिसमें विभागीय मांग पत्र, निरीक्षण प्रतिवेदन, उपयोगिता प्रमाण पत्र, कार्य पूर्ण होने का जियो टैग फोटो संबंधित कार्यालय प्रमुख का सत्यापन कार्य की गुणवत्ता और पूर्णता प्रमाण पत्र तथा अंतिम मूल्यांकन एम.बी. की प्रमाणित प्रति अनिवार्य होगी। साथ ही यह अंतिम भुगतान 1 नवम्बर के बाद ही किया जाएगा। यह भी स्पष्ट किया गया है कि वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद ही कार्य की गुणवत्ता की जांच के आधार पर अंतिम भुगतान स्वीकृत किया जाएगा और इस निर्धारित भुगतान प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की छूट केवल विभाग प्रमुख द्वारा पृथक से प्रस्तुत पत्र प्राप्त होने के उपरांत ही दी जा सकेगी। कलेक्टर द्वारा लिया गया, यह निर्णय डीएमएफ मद से होने वाले कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने एवं जनता को स्थायी लाभ पहुंचाने की दिशा में एक सशक्त और पारदर्शी पहल मानी जा रही है।

अपर कलेक्टर विनायक शर्मा को सौंपी गई भरतपुर न्यायालय की नई जिम्मेदारी

भरतपुर को मिली नई सौगात अब वहीं होगा न्यायालय और जनदर्शन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले के विकासखंड भरतपुर के नागरिकों की सुविधा के लिए कलेक्टर डी. राहुल वेंकट द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक निर्णय लिया गया है। उन्होंने नवपदस्थ अपर कलेक्टर विनायक शर्मा को भरतपुर स्थित अपर कलेक्टर न्यायालय की जिम्मेदारी सौंपी है। इस निर्णय से अब भरतपुर ब्लॉक के रहवासियों को न्यायिक एवं प्रशासनिक कार्यों के लिए जिला मुख्यालय तक नहीं जाना पड़ेगा। वहीं विनायक शर्मा भरतपुर अनुविभाग में नियमित रूप से जनदर्शन के माध्यम से आमजन की समस्याएं सुनेंगे और त्वरित समाधान सुनिश्चित करेंगे। जनदर्शन प्रत्येक द्वितीय और चतुर्थ मंगलवार को प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय, भरतपुर में आयोजित किया जाएगा। इसी दिन अपर कलेक्टर न्यायालय की कार्यवाही दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक भरतपुर स्थित राजस्व कार्यालय में संपन्न होगी।

महिला वकील ने क्लाइंट को पीटा, बाल पकड़कर खींचा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। बिलासपुर के फैमिली कोर्ट में एक महिला वकील ने अपने क्लाइंट और उसके परिजन के साथ जमकर मारपीट की। इस दौरान वकील ने हार्ट पेशेंट महिला को धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया, जिसके बाद उसकी बेटी का बाल पकड़कर खींचने लगी। वहीं, उसके भाई का टी-शर्ट पकड़ धमकाती रही। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। 10 जुलाई को हुई इस घटना का वीडियो भी सामने आया है, वीडियो में देखा जा सकता है कि वकील कह रही है कि उसे किसी का डर नहीं है। वहीं, पुलिस बचाने आई जरूर लेकिन रोक नहीं पाई। पीड़ित सुमन ठाकुर ने महिला वकील पर फीस लेने के बाद केस लड़ने से मना कर देने का आरोप लगाया है। वहीं, वकील लीना अग्रहरी ने महिला के भाई पर बदतमीजी का आरोप लगाया है। बाद में दोनों पक्ष ने समझौता भी कर लिया।

'महादेव बुक' के बाद छत्तीसगढ़ में 'शिवा बुक' की एंट्री

दोनों का एक ही सोर्स कोड, 20 करोड़ का ट्रांजेक्शन; नेटवर्क से हवाला-बिटकॉइन-ड्रग्स का लेनदेन

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ में 'महादेव बुक' के बाद 'शिवा बुक' सट्टा एप की एंट्री हो गई है। खैरागढ़ पुलिस के मुताबिक 'शिवा बुक' नाम के सट्टा एप के जरिए 20 करोड़ का ट्रांजेक्शन किया गया है, जांच में इसका कनेक्शन दुर्ग और नागपुर दो जगहों पर मिला। बताया जा रहा है एप का कनेक्शन दुबई तक है।

मामला खैरागढ़ थाना क्षेत्र का है। सटोरिए महाराष्ट्र के नागपुर में किराए से एक फ्लैट लिए थे, जहां से इसका संचालन किया जाता था। मोबाइल-लैपटॉप से ऑनलाइन गेमिंग एप पर सट्टा खिलाते थे। 11 जुलाई को पुलिस ने नागपुर से 6 आरोपियों की गिरफ्तारी की है, सभी छत्तीसगढ़ के रहने वाले हैं।

जांच में सामने आया है कि जिस सर्वर से महादेव बुक चलाया जाता था उसी सर्वर से इस 'शिवा एप' का भी इस्तेमाल हो रहा था। पुलिस इस डिटेल्स की जांच कर रही है और ये पता लगाने की कोशिश कर रही है कि, कहीं इसका कनेक्शन हवाला, ड्रग्स और बिटकॉइन के संदिग्ध लेनदेन में तो नहीं।पुलिस के मुताबिक छुई खदान थाना क्षेत्र में ऑनलाइन सट्टा और जुआ खिलाने की शिकायत पर 18 जून को एक आरोपी को गिरफ्तार किया था, तब शिवा बुक सट्टा एप की जानकारी मिली थी। इसकी जांच के बाद दुर्ग और नागपुर में इसके दो ब्रांच का पता चला, जहां कार्रवाई की गई।

बता दें कि छत्तीसगढ़ में महादेव सट्टा एप ब्लॉक किया गया है,? जो लोग महादेव एप में पैसा लगाते थे वो अब शिवा बुक पर दांव लगा रहे हैं। जांच में यह भी सामने आया है कि महादेव बुक, अन्ना रेड्डी, लोटस, शिवनाथ और शिवा बुक जैसे एप एक ही सर्वर से चलते हैं। सभी एप एक ही सोर्स कोड पर काम करते हैं।

एजेंसियों के मुताबिक, यह नेटवर्क हवाला, ड्रग्स और बिटकॉइन के संदिग्ध लेनदेन में भी शामिल रहा है। खैरागढ़ पुलिस जब्त डेटा और बैंक डिटेल्स की जांच कर रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या शिवा बुक एप का नेटवर्क महादेव बुक या अन्ना रेड्डी रैकेट से लिंक है। आरोपियों के कब्जे से 50 हजार रुपए नगद और बैंक खातों में 2.28 लाख रुपए जब्त किए हैं। इसके अलावा 25 मोबाइल फोन, 2 लैपटॉप, 26 एटीएम कार्ड, 19 बैंक पासबुक और 14 चेकबुक भी मिले हैं। आरोपियों के पास से 8 आधार कार्ड, पासपोर्ट और सट्टे के हिसाब-किताब के रजिस्टर भी बरामद हुए हैं।पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने बैंक खातों और यूपीआई से 20 करोड़ रुपए से ज्यादा का लेनदेन किया है। एसपी लक्ष्य शर्मा के निर्देश पर सायबर सेल और थाना छुईखदान की टीम ने नागपुर में कार्रवाई की।पुलिस के मुताबिक, इस नेटवर्क का मुख्य संचालक दुर्ग का रहने वाला है, जिसकी गिरफ्तारी के लिए टीमें लगातार दबिश दे रही हैं। इस नेटवर्क में और भी लोगों की संलिप्तता की संभावना है। एसपी लक्ष्य शर्मा ने बताया कि 18 जून 2025 को खैरागढ़ का एक व्यक्ति ऑनलाइन जुआ खेल रहा था, तब पुलिस ने उसे पकड़ा। फिर इस एप के सर्वर को ट्रेस किया गया, जिससे 2 ब्रांच का पता चला। एक ब्रांच दुर्ग में थी दूसरी ब्रांच नागपुर में थी। पुलिस के मुताबिक अभी इसमें और कार्रवाई होना बाकी है।

जिले में अब तक 365.6 मि.मी. वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले में मानसून ने जोर पकड़ लिया है और लगातार हो रही बारिश से खेतों में हरियाली की उम्मीदें प्रबल हो गई हैं। भू-अभिलेख विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, बीते 24 घंटे में जिले में औसत 38.3 मि.मी. बारिश दर्ज की गई है, जबकि भरतपुर तहसील में अब तक की सर्वाधिक 415.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। 1 जून से 10 जुलाई 2025 तक जिले में कुल औसत 335.6 मि.मी. वर्षा भू-अभिलेख शाखा द्वारा दर्ज गई जानकारी के अनुसार खरीफ फसलों की बोआई के लिए अनुकूल मानी जा रही है। भू-अभिलेख शाखा के अनुसार, तहसीलवार वर्षा की बात करें तो मनेंद्रगढ़ में 277.5 मि.मी., खड़गवां में 318.9 मि.मी., चिरमिरी में 345.2 मि.मी., केल्हारी में 268.5 मि.मी., भरतपुर में 415.7 मि.मी. और कोटाडोल में 387.6 मि.मी. बारिश दर्ज की गई है ।

फ्री-फायर गेम से दोस्ती,शादीशुदा महिला ने नाबालिग से बनाए संबंध

जांजगीर-चांपा में नाबालिग को शादी का झांसा देकर किया अनाचार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा में एक शादीशुदा महिला को नाबालिग के साथ रेप के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। नाबालिग के परिजनों ने उसके गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने नाबालिग को जगदलपुर से बरामद किया है। साथ ही महिला को भी गिरफ्तार कर जांजगीर ले आई। महिला का पति उसे छोड़ चुका है। यह मामला जांजगीर थाना क्षेत्र का है।उप निरीक्षक सत्यम चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि 1 जुलाई को एक नाबालिग के परिजन ने थाना जांजगीर में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि उनका बेटा 28 जून से लापता है। आसपास के इलाकों में काफी तलाश के बाद भी जब उसका कोई सुराग नहीं लगा, तो पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज किया।

पुलिस ने जांच शुरू की तो पता चला कि नाबालिग लड़का जगदलपुर में है। तुरंत एक पुलिस टीम को रवाना किया गया, जहां से नाबालिग को बरामद कर लिया गया और उसके साथ रह रही 25 वर्षीय महिला को हिरासत में लिया गया।

पूछताछ में नाबालिग ने पुलिस को बताया कि वो फ्री फायर गेम खेलता था। फ्री फायर गेम खेलते-खेलते नाबालिग एक 25 साल की शादीशुदा महिला के संपर्क में आया गया। इस बीच दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ गई। दोनों इंस्टाग्राम पर बात करने लगे और फोन नंबर भी एक-दूसरे से शेयर किए।

गुरु पूर्णिमा पर भाजपा ने किया गुरुजनों का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जिला इकाई मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) ने हल्दीबाड़ी एनसीपीएच क्लब में भव्य गुरु पूर्णिमा उत्सव 2025 का आयोजन किया। इस दौरान स्थानीय गुरुओं को एक मंच पर आमंत्रित कर उनकी चरण वंदना, पूजन और सम्मान किया गया। गुरुओं को शाल, श्रीफल, मिठाई और मोमेंटो भेंट किए गए। कार्यक्रम में शामिल हुए प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल भावुक हो गए, क्योंकि कई गुरुओं के सानिध्य में उन्होंने ज्ञान अर्जित किया था। उन्होंने सभी गुरुओं की चरण वंदना कर उनका आशीर्वाद लिया। मंत्री जायसवाल ने अपने उद्बोधन में गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता पर

प्रकाश डाला। उन्होंने संत कबीर की वाणी "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए" का उल्लेख करते हुए कहा कि गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं, और ज्ञान के बिना मानवता का अस्तित्व नहीं। उन्होंने युवा पीढ़ी को भारतीय मूल्यों और परंपराओं से जुड़ने का आह्वान किया। जायसवाल ने ब्रिटिश काल की मैकाले शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए कहा कि इसने भारतीय महापुरुषों को इतिहास से हटाकर विदेशी आक्रांताओं का महिमामंडन किया।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लागू नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सराहना की, जो चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, शिवाजी महाराज और अहिल्याबाई होलकर जैसे महान व्यक्तित्वों को शिक्षा के केंद्र में ला रही है। उन्होंने कहा कि भारत शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक जागरण में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। उन्होंने आगे कहा, "गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को गुरुओं ने मर्यादित बनाया, और नटखट कृष्ण को गुरु सानिध्य ने नारायण बनाया। गुरु के बिना ज्ञान का संचार असंभव है।"कार्यक्रम में सम्मानित गुरुओं और वरिष्ठजनों में कैलाश पाण्डेय, यशवंत सिंह, भागवत दुबे, झारोलिया, कृष्णा मैम, प्रणव चक्रवर्ती, जगन्नाथ मंदिर के महंत, कथा वाचक मिथलेश, हरिकांत अग्निहोत्री, राजेंद्र पटेल, राजेंद्र शुक्ला, राम नरेश सिंह, साधुराम बेलबंशी, तरुण शर्मा और डीके उपाध्याय शामिल रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में अनिल केशरवानी, द्वारिका जायसवाल, राहुल सिंह, रीत जैन, कीर्ति वासो, संतोष सिंह, रघुनंदन यादव, गौरी हाथगेन, इंदु पनेरिया, रीता आइच, जिला भाजपा पदाधिकारी, महिला कार्यकर्ता, नगर निगम चिरमिरी के एमआईसी और पार्षदों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जनजातीय अंचलों में66 नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों की स्वीकृति

भोपाल ,एजेसी। प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में बाल विकास एवं पोषण सेवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में राज्य सरकार द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत वर्ष 2025-26 में 66 नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों की स्थापना और भवन निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गई है। यह स्वीकृति केन्द्र सरकार द्वारा अनुमोदित अभियान के अंतर्गत प्राप्त हुई है। स्वीकृत नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों के संचालन के लिए 66 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता (मानसेवी), 66 आंगनवाड़ी सहायिका (मानसेवी) तथा 02 पर्यवेक्षक (नियमित वेतनमान) के पद स्वीकृत किए गए हैं। 12 लाख रूपये प्रति भवन की लागत निर्धारित की गई है, जिसकी शत-प्रतिशत राशि केन्द्र सरकार द्वारा वहन की जाएगी। उल्लेखनीय है कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत प्रदेश के बड़वानी जिले में 25, देवास में 9, खरगौन और रतलाम में 7-7, धार में 5, पन्ना और रीवा में 3-3,श्योपुर और सिंगरौली में 2-2 तथा बैतूल, गुना और नर्मदापुरम में एक-एक आंगनवाड़ी केन्द्र की स्वीकृति मिली है। उल्लेखनीय है कि इस निर्णय से न केवल जनजातीय क्षेत्रों में बाल देखभाल, पोषण, स्वास्थ्य और पूर्व शिक्षा सेवाओं की पहुंच मजबूत होगी, बल्कि स्थानीय समुदायों में रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। योजना के अंतर्गत कुल 132 मानसेवी पदों पर चयन के माध्यम से स्थानीय महिलाओं को सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रोत्साहन मिलेगा।यह पहल धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के नाम पर समर्पित उत्कर्ष अभियान को जनजातीय सशक्तिकरण के स्थायी मॉडल के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। राज्य सरकार द्वारा इस योजना को तत्परता से क्रियान्वित करते हुए जनजातीय समुदायों को सुविधा, सम्मान और समान अवसर देने की दिशा में प्रतिबद्धता का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

दिल्ली-एनसीआर में बाढ़ के हालात, गाड़ियां तैरीं

नई दिल्ली ,एजेंसी। दिल्ली-ह्यष्ट्रक्रमें बीते 12 घंटे से तेज बारिश जारी है। बुधवार शाम हुई बारिश के बाद दिल्ली और गुरुग्राम की सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात हैं। गाड़ियां पानी में तैरती नजर आईं। कई इलाकों में लोग तक पानी में डूब गए। घरों में पानी भर गया है। वहीं उत्तराखंड में बारिश के चलते कई जगहों में लैंडस्लाइड हुई है। रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ रोड पर पहाड़ टूट गया। दिल्ली और गुरुग्राम में आज बारिश का अलर्ट है। बुधवार शाम हुई तेज बारिश के बाद शहर की अधिकतर सड़कों पर पानी भर गया। गुरुग्राम सेक्टर 6 में शीतला माता मंदिर के पास गाड़ियां पानी में तैरती नजर आईं। लोग तक पानी में डूब गए। दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे के नरसिंहपुर के नजदीक सर्विस लेन पर 2 फुट तक पानी जमा हो गया। दिल्ली और गुरुग्राम में आज भी बारिश का अलर्ट है।

हरियाणा के शहीद पायलट को अंतिम विदाई

रोहतक ,एजेंसी। अंतिम यात्रा रोहतक में श्मशान घाट पहुंच गई है। लोग जय हिंद के नारे लगा रहे हैं। थोड़ी देर में सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। वह कल (9 जुलाई) राजस्थान के चुरू में जगुआर फाइटर जैट क्रैश में को-पायलट समेत शहीद हो गए थे। आज करीब 6 बजे उनकी पार्थिव देह घर पहुंची। जिसके बाद पत्नी डॉ. सुरभि ने एक महीने के बेटे के साथ शहीद पति के अंतिम दर्शन किए। इसके बाद श्मशान घाट में वायुसेना ने उन्हें तिरंगा और कैप सौंपी, जिसे सुरभि ने माथे से लगाया। इससे पहले शहीद के बड़े भाई ज्ञानेंद्र बहन अंशी का हाथ पकड़कर कहते रहे कि लोकेंद्र को स्माइल के साथ अंतिम विदाई देंगे।

मुय सचिव की अध्यक्षता में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की हुई बैठक

भोपाल,एजेसी। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन की अध्यक्षता में मंत्रालय में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की बैठक हुई। बैठक में 192 एवं 193 वीं बैठक का पालन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के बैंक बिजनिस, क्रेडिट प्लान, प्रदेश में नवीन बैंक शाखाओं की अद्यतन स्थिति, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, अटल पेंशन योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम स्वनिधि, पीएम विश्वकर्मा स्कीम, के अलावा कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं अन्य विषयों पर चर्चा की गयी।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने पीएम स्वनिधि योजना के 19196 प्रकरणों के लंबित रहने पर नाराजगी व्यक्त की एवं संबंधित बैंक प्रबंधकों को नोटिस देने के निर्देश दिये। साथ ही सभी लंबित प्रकरणों का निराकरण 15 दिन में करने के लिए निर्देशित किया। स्वामित्व योजना का लाभ हितग्राहियों को देने के निर्देश दिये गये। मुख्य सचिव ने विभिन्न योजनाओं में इंश्योरंस क्लेम की जानकारी देने वित्तीय जागरूकता अभियान चलाने के लिए वित्त विभाग को निर्देशित किया।

बैठक में अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक वर्णवाल, अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा, संसदीय कार्य, श्री अनुपम राजन, प्रमुख सचिव, औद्योगिक नीति एवं निवेश श्री राघवेंद्र कुमार सिंह, प्रमुख सचिव राजस्व श्री विवेक कुमार पोरवाल एवं बैंकों के मुख्य महाप्रबंधक, प्रबंधक एवं निदेशक उपस्थित थे।

कर्नाटक में मुख्यमंत्री की कोई वैकेंसी नहीं

बेंगलुरु ,एजेंसी। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने एक बार फिर राज्य में ष्टरू बदले जाने की चर्चाओं को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि स्टेट में इस पोस्ट के लिए कोई वैकेंसी नहीं है, क्योंकि वे अभी भी कुर्सी पर बैठे हैं। सिद्धारमैया ने दावा किया है कि वे मुख्यमंत्री के रूप में 5 साल का कार्यकाल पूरा करेंगे। पिछले कुछ समय से कर्नाटक में विधायकों के एक दल ने डीके शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनाने कहा था। जिसके बाद साल के आखिर तक शिवकुमार के कार्यभार संभालने की चर्चाएं जोर पकड़ने लगीं। सिद्धारमैया आज दिल्ली में हैं, जहां वे कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे और सोनिया-राहुल समेत बाकी सीनियर कांग्रेस नेताओं से मिलेंगे। मई 2023 में विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद मुख्यमंत्री पद के लिए सिद्धारमैया और शिवकुमार के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा थी, और कांग्रेस ने बाद में उन्हें मनाने में कामयाबी हासिल की और उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया। उस समय कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि रोटेशनल चीफ मिनिस्टर फॉर्मूले के आधार पर समझौता हो गया था, जिसके मुताबिक शिवकुमार ढाई साल बाद सीएम बनेंगे, लेकिन पार्टी ने आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि नहीं की थी।

कर्नाटक- हासन में 40 दिन में हार्टअटैक से 23 मौतें

बेंगलुरु ,एजेंसी। कर्नाटक के हासन में हार्ट अटैक से मौत के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले 40 दिनों में यहां हार्ट अटैक से 23 मौतें हो चुकी हैं। इनमें से छह की उम्र 19 से 25 साल के बीच थी। वहीं, आठ की उम्र 25 से 45 साल के बीच थी। उधर बेंगलुरु के जयदेव अस्पताल में हार्ट अटैक के मरीजों की संख्या में 8ल का इजाफा हुआ है। डॉक्टरों ने बताया कि बढ़ते मामलों के बीच हासन और आसपास के जिलों से कई लोग एहतियाती जांच के लिए आ रहे हैं। मैसुरु के भी जयदेव अस्पताल में हार्ट से जुड़ी जांच के लिए रोजाना हजारों लोग पहुंच रहे हैं। डॉक्टर बोले- घबराएं नहीं, खानपान में बदलाव करें जयदेव अस्पताल, मैसूर के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. केएस सदानंद ने लोगों से घबराने की अपील नहीं की। उन्होंने कहा, मीडिया में खबरें देखने के बाद, लोग घबराहट में अस्पताल की ओर भाग रहे हैं। जयदेव अस्पताल में एक बार जांच कराने से समस्या का समाधान नहीं होगा। लोगों को अपने आस-पास उपलब्ध किसी भी अस्पताल में हृदय की जांच करवानी चाहिए। सिर्फ हार्ट की जांच से भविष्य में होने वाली समस्याओं से बचा नहीं जा सकता। जीवनशैली में बदलाव जरूरी है। अच्छी सेहत बनाए रखने के लिए नियमित एक्सरसाइज भी जरूरी है।

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन जारी रहेगा

पटना ,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को बिहार विधानसभा चुनाव से पहले वोटर लिस्ट के रिवीजन जारी रखने की अनुमति दी। अदालत ने इसे संवैधानिक जिम्मेदारी बताया। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने विशेष गहन पुनरीक्षण (स्ड्रक्र) यानी वोटर लिस्ट रिवीजन की टाइमिंग पर सवाल उठाए। अदालत ने चुनाव आयोग से कहा कि बिहार में स्ड्रक्र के दौरान आधार, वोटर आईडी, राशन कार्ड को भी पहचान पत्र माना जाए। बेंच के मुताबिक, 10 विपक्षी दलों के नेताओं समेत किसी भी याचिकाकर्ता ने चुनाव आयोग की इस प्रक्रिया पर अंतरिम रोक की मांग नहीं की है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाओं पर चुनाव आयोग से 21 जुलाई तक जवाब मांगा। अगली सुनवाई 28 जुलाई के लिए तय की। विशेष गहन पुनरीक्षण यानी वोटर लिस्ट रिवीजन पर अदालत में करीब 3 घंटे सुनवाई हुई। याचिकाकर्ताओं का आरोप है कि वोटर लिस्ट रिवीजन नियमों को दरकिनार कर किया जा रहा है। वोटर की नागरिकता जांची जा रही है। ये कानून के खिलाफ है।

गाँधी सागर अभयारण्य में पाया गया दुर्लभ स्याहगोश''

भोपाल ,एजेसी। गाँधी सागर अभ्यारण्य मंदसौर में दुर्लभ प्रजाति केस्याहगोश'' (कैराकल) की उपस्थिति दर्ज हुई है। गाँधी सागर वन्य-जीव अभ्यारण्य में कैराकल'' जिसे स्थानीय रूप से स्याहगोश'' कहा जाता है कैमरा ट्रैप में दिखाई दिया। यह मांसाहारी प्रजाति का अत्यंत शर्मीला, तेज गति से दौड़ने वाला और सामान्यत: रात्रिचर वन्य-जीव है। यह मुख्यत: शुष्क, झाड़ीदार, पथरीले और खुली घास वाले इलाकों में पाया जाता है। भारत में अब यह प्रजाति विलुप्तप्राय श्रेणी में रखी गयी है और इसकी उपस्थिति बहुत ही दुर्लभ मानी जाती है।

गाँधी सागर अभ्यारण्य के वन अधिकारी ने बताया कि वन मण्डल मंदसौर में लगाये गये कैमरा ट्रैप में एक वयस्क

नर कैराकल की उपस्थिति दर्ज हुई है जो जैव विविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अभ्यारण्य में संरक्षित आवासों की गुणवत्ता और संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है। कैराकल की उपस्थिति यह दर्शाती है कि गाँधी सागर क्षेत्र के शुष्क और अर्द्ध-शुष्क पारिस्थितिकीय तंत्र अब भी इतने समृद्ध और संतुलित हैं जो इस दुर्लभ प्रजाति को आश्रय दे सकते हैं।

मध्यप्रदेश में पिछले कई वर्षों बाद किसी संरक्षित क्षेत्र में कैराकल की पुष्टि हुई है जो प्रदेश के लिये गर्व की बात है। यह खोज न केवल वन्य-जीव शोध के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है, बल्कि हमारे संरक्षण प्रयासों की सफलता का भी प्रमाण है। इस उपलब्धि के लिये वन विभाग एवं गाँधी सागर वन्य-जीव अभ्यारण्य के अधिकारी-कर्मचारियों के विशेष प्रयासों से विविध पारिस्थितिकी संरक्षित रह पायी है जिससे आज यह अभ्यारण्य दुर्लभ प्रजातियों के लिये भी एक सुरक्षित आश्रय-स्थली बना हुआ है।

महर्षि सांदीपनि की शिक्षा से भगवान श्रीकृष्ण को बने जगद्गुरु

भोपाल ,एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुरू महर्षि सांदीपनि द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व-गुरू की उपाधि मिली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को गुरु पूर्णिमा पर उज्जैन के महर्षि सांदीपनि आश्रम पहुंचकर भगवान श्रीकृष्ण के गुरु महर्षि सांदीपनि के दर्शन किये और पूजन-अर्चन कर आरती की।

पंडित राजेश जोशी ने पूजा अर्चना संपन्न करवायी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर अति प्राचीन श्री कुंडेश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर भगवान के दर्शन भी किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे पिछले कई वर्षों से लगातार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सांदीपनि आश्रम आकर दर्शन और पूजा अर्चना करते हैं। महर्षि सांदीपनि आश्रम का

अतीत अत्यंत गौरवशाली और अद्वितीय रहा है। आज से लगभग 5000 वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण, श्री सुदामा और श्री बलराम ने यहां आकर महर्षि सांदीपनि से विद्या ग्रहण की थी। भगवान श्रीकृष्ण ने यहां उनके गुरु महर्षि सांदीपनि व्यास से बहुत कम दिनों में 14 विद्या और 64 कलाओं का अध्ययन किया था।

एक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कैसे हो सकता है, इसका इतिहास इसी सांदीपनि आश्रम में रचा गया था। महर्षि सांदीपनि के द्वारा प्रदान की गई विद्या से ही भगवान श्रीकृष्ण को विश्व गुरु की उपाधि मिली। वर्तमान में भारत फिर अपने गौरवशाली अतीत को प्राप्त कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपनी ओर से सभी को गुरु पूर्णिमा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, श्री संजय अग्रवाल, श्री राजपाल सिंह सिसोदिया सहित अधिकारी और नागरिक मौजूद रहे।महर्षि सांदीपनि व्यास के वंशज और मंदिर के पुजारी परिवार के सदस्यों ने जानकारी दी कि प्रतिवर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आश्रम में विशेष आयोजन किया जाता है। सांदीपनि आश्रम में प्रात: विशेष पूजन अर्चन और पंचामृत अभिषेक किया गया। साथ ही प्रथम बार शिक्षा प्रारंभ करने वाले विद्यार्थियों के द्वारा यहां पर स्लेट की पूजा की गई।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उज्जैन में भगवान श्री काल भैरव मंदिर पहुंचकर दर्शन और पूजन अर्चन किया और देश-प्रदेश की सुख समृद्धि की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान श्री महाकाल की नगरी से देश और प्रदेशवासियों को गुरु पूर्णिमा पर्व की मंगलकामनाएं भी दी।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की स्प्री-2025 योजना को मिली मंजूरी

भोपाल ,एजेसी। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने नियोक्ताओं और कर्मचारियों के पंजीकरण को बढ़ावा देने के लिए स्प्री 2025 यानि स्कीम टू प्रमोट रजिस्ट्रेशन ऑफ इम्प्लॉयर्स/इम्प्लॉयीज योजना को स्वीकृति दी है। इस निर्णय की घोषणा शिमला, हिमाचल प्रदेश में आयोजित 196वीं ईएसआई निगम की बैठक में की गई, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय श्रम और रोजगार तथा युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने की।संयुक्त निदेशक श्री निश्चल कुमार नाग, प्रभारी, उप क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल से प्राप्त जानकारी के अनुसार स्प्री योजना का उद्देश्य ईएसआई अधिनियम, 1948 के अंतर्गत अब तक पंजीकृत नहीं हुए प्रतिष्ठानों एवं श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना है। यह योजना 1 जुलाई से 31 दिसंबर 2025 तक लागू रहेगी। इसके अंतर्गत नियोक्ता डिजिटल माध्यमों जैसे- श्वस्ड्ढष्ट पोर्टल, श्रम सुविधा पोर्टल, स्ष्ट पोर्टल से अपने प्रतिष्ठान एवं कर्मचारियों का पंजीकरण कर सकते हैं। पंजीकरण नियोक्ता द्वारा घोषित तिथि से वैध माना जाएगा। पंजीकरण की तिथि से पूर्व की अवधि के लिए कोई देनदारी, योगदान या रिकॉर्ड की मांग नहीं की जाएगी और कोई निरीक्षण या कानूनी कार्रवाई नहीं की जाएगी, जो पहले अपंजीकरण की स्थिति में संभावित थी।

स्प्री योजना का प्रमुख उद्देश्य पिछली देनदारियों के भय को समाप्त कर स्वैच्छिक अनुपालन को बढ़ावा देना है, इससे कॉन्ट्रेक्ट, अस्थायी और अनियमित श्रमिकों को भी स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त होंगे। इस योजना के अंतर्गत नकद लाभ (बीमारी, मातृत्व, चोट या मृत्यु की स्थिति में), कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के लिए चिकित्सा सेवाएं, दीर्घकालिक सामाजिक सुरक्षा जैसे विकलांगता लाभ, पेंशन आदि लाभ उपलब्ध होंगे।

यह योजना उन नियोक्ताओं पर लागू होगी जिनके प्रतिष्ठानों यानि कारखानें,

विगत 5 माह में एक करोड़ से अधिक हितग्राहियों का हुआ ई-केवायसी

भोपाल ,एजेसी। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि भारत सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत सभी पात्र हितग्राहियों की पहचान सुनिश्चित करने के लिये ई-केवायसी करवाई जा रही है। गत 5 माह में एक करोड़ से अधिक हितग्राहियों की ई-केवायसी कराई जा चुकी है और अब लगभग 20 लाख नवीन पात्र हितग्राहियों को पात्रता पर्ची दी जा सकेगी। इन नवीन हितग्राहियों को पात्रता पर्ची जारी करने के लिये विंडो ओपन किया जा रहा है। आयुक्त खाद्य श्री कर्मवीर शर्मा ने जानकारी दी है कि प्रदेश की लगभग 27 हजार उचित मूल?य दुकानों पर लगाई गई पीओएस मशीन से पात्र हितग्राहियों के ई-केवायसी करने की व्यवस्था के अतिरिक्त वृद्ध, बच्चों के तथा हितग्राही द्वारा घर बैठे ई-केवायसी करने की सुविधा भारत सरकार के मेरा ई-केवायसी एप से फेस एथेंटिकेशन द्वारा करने की सुविधा दी गई है। सभी हितग्राहियों को ई-केवायसी कराने के लिये प्रतिमाह 2 से 3 बार किए गए। उचित मूल्य दुकानो पर इस संबंध में सूचना प्रदर्शित की गई।

समाचार पत्रो में ई-केवायसी कराने के लिये

संक्षिप्त समाचार

कमाई में भी पीछे नहीं हैं गावस्कर, करोड़ों में है नेटवर्थ

मुम्बई (एजेंसी)। लिटिल मास्टर के रुप में लोकप्रिय रहे भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर 76 वर्ष की उम्र में भी क्रिकेट से मोटी कमाई कर रहे हैं। खेल से संन्यास के बाद गावस्कर कमेंट्री से जुड़ गये थे। अपने अंदाज के कारण गावस्कर ने कमेंटेटर के तौर पर अलग पहचान बनायी है। संन्यास के कई साल बीत जाने के बाद भी गावस्कर के पास करोड़ों के विज्ञापन हैं। उनके पास महंगी लक्जरी गाड़ियां हैं। उनके पास देश में ही नहीं विदेश में भी संपत्ति है। उनकी नेटवर्थ में लगातार बढ़ रही है। उन्हें बीसीसीआई से भी हर महीने पेंशन की राशि मिलती है। इसके अलावा वह आईपीएल 2025 के बाद से ही एक सत्र में सबसे अधिक रकम पाने वाले कमेंटेटर भी बन गये हैं। गावस्कर की नेटवर्थ लगभग 250 करोड़ है। उन्होंने ये संपत्ति कमेंट्री, विज्ञापनों और पेंशन से अर्जित की है। एक रिपोर्ट के मुताबिक गावस्कर आईसीसी और आईपीएल कमेंट्री से करीब 30 से 36 करोड़ कमाते हैं। आईपीएल के पिछले सत्र के बाद से वह एक कमेंट्री में एक सत्र से लगभग 4.17 करोड़ कमा रहे हैं। वहीं बीसीसीआई से जुड़े मैच अनुबंध से वह लगभग 6 करोड़ कमा रहे हैं। बीसीसीआई से उन्हें पेंशन के तौर पर प्रति माह 70 हजार रुपये मिलते हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड 75 या उससे ज्यादा टेस्ट खेलने वाले अपने खिलाड़ियों को हर महीने ये राशि देता है. गावस्कर कई बड़े ब्रैंड्स के विज्ञापन भी करते हैं। उनक क्रिकेट बल्ले बनाने वाली विश्व की सबसे बड़ी बैट कंपनी एसजी के साथ भी करार हुआ है। इसके अलावा वह कारोबार भी करते हैं। साल 1985 में गावस्कर ने सुमेध शाह के साथ मिलकर देश की पहली स्पोर्ट्स मैनेजमेंट कंपनी बनाई। वर्तमान में गावस्कर इस कंपनी के निदेशक हैं। गावस्कर के पास गोवा में एक आलीशान कोठी है जिसकी कीमत करीब 20 करोड़ है। इसके अलावा दुबई के पॉश इलाके पाल्म जुमैराह में भी गावस्कर का घर है। उनके पास बीएमडब्ल्यू 5 सीरीज और 7 सीरीज की कारें हैं। गावस्कर की गैराज में डेढ़ करोड़ से अधिक की कीमत वाली एमजी हेक्टर प्लस और 1.2 करोड़ से अधिक की बीएमडब्ल्यू 7 सीरीज कारें हैं। गावस्कर समाजसेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। उनकी संस्था जरूरतमंद लोगों की सेवा करती है।

क्रिकेटर यश दयाल हाई कोर्ट पहुंचे, गिरतारी पर रोक लगाने की मांग की

प्रयागराज (एजेंसी)। यौन शोषण के आरोपों में फंसे क्रिकेटर यश दयाल ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में एक याचिका दायर कर गिरफ्तारी पर रोक लगाने की मांग की है। यश के खिलाफ एक युवती ने शादी का झांसा देकर मानसिक और शारीरिक शोषण का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज करायी है। वहीं अब यश ने अपनी याचिका में इसी एफआईआर को रद्द करने की मांग की है। यश पर आरोप लगाने वाली लड़की का कहना है कि वे दोनो पिछले पांच साल से रिलेशनशिप में थे। इस दौरान दयाल ने शादी का वादा करके उसका यौन शोषण किया। यह मामला गाजियाबाद के इंदिरापुरम पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया है। हाई कोर्ट इस मामले में अगले सप्ताह सुनवाई कर सकता है।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने इंग्लैंड में जीती पहली टी20 सीरीज

चौथे मैच में मेजबानों को छह विकेट से हराया

राधा यादव बनी प्लेआर ऑफ द मैच

लंदन (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने मेजबान इंग्लैंड को चौथे टी20 मैच में छह विकेट से हरा दिया। इसी के साथ ही भारतीय टीम ने इंग्लैंड में पहली बार टी20 सीरीज जीती है। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम ने पांच मैचों की सीरीज में 3-1 की बढ़त हासिल कर ली है। इससे पहले भारतीय टीम ने साल 2006 में डर्बी में खेले गए एकमात्र टी-20 मैच में इंग्लैंड को हराया था। उसके बाद से भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू और विदेशी धरती पर एक बार भी टी-20 सीरीज नहीं जीती है। इस मैच में भारतीय टीम की जीत में गेंदबाजों की अहम भूमिका रही। स्पिनर राधा यादव ने 15 रन देकर दो विके लिए और उन्हें प्लेआर ऑफ द मैच को अवार्ड मिला। वहीं श्री चरणी ने 30 रन देकर दो जबकि दीप्ति शर्मा ने 29 रन देकर एक विकेट लिया। इस इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड की महिलाएं सात विकेट पर 126 रन ही बना पायीं। इसके बाद जीत के लिए मिले लक्ष्य को भारतीय महिलाओं ने सलामी बल्लेबाज़ शेफाली वर्मा के 32 और स्मृति मंधाना के 31 रनों की सहायता से पहले विकेट के लिए 56 रन की साझेदारी की इसके बाद जेमिमा रोड्रिग्स ने नाबाद 24 और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 26 रन बनाकर टीम को लक्ष्य तक पहुंचा दिया। भारतीय टीम ने तीन ओवर पहले ही 127 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। इस जीत प खुशी जताते हुए भारतीय महिला टीम की हरमनप्रीत ने कहा, हमें बहुत खुशी है कि हम यहां सीरीज जीतने में सफल रहे हैं। जिस तरह से हमने इस सीरीज में प्रदर्शन किया उससे मुझे अपनी टीम पर गर्व है। इसमें हर खिलाड़ी में अपना योगदान दिया उससे मैं बहुत खुश हूं। उन्होंने कहा, 'इंग्लैंड दौरे पर आने से पहले हमने भारत में अभ्यास शिविर में भाग लिया था जिसका लाभ हमें मिला। हमने अपनी रणनीति पर काम किया था और यहां उस पर अच्छी तरह से अमल किया। हर किसी को अपनी भूमिका पता थी और उसी के अनुसार हमने खेला। भारतीय टीम ने इस सीरीज के पहले मैच में इंग्लैंड को रिकॉर्ड 97 रन से हराया था। इसके बाद ब्रिस्टल में उसे 24 रन से जीत मिली। इंग्लैंड की महिला टीम की सबसे छोटे प्रारूप में इस मैदान पर पहली पराजय थी। वहीं तीसरे मैच में मेजबान टीम जीती। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड की टीम शुरूआत अच्छी नहीं रही। भारतीय स्पिनरों राधा और दीप्ति ने शुरुआत में ही दोनों सलामी बल्लेबाजों को पेवेलियन भेजे दिया। नैट साइवर-ब्रंट की अनुपस्थिति में कप्तानी कर रही टैमी ब्यूमोंट ने तेजी से 20 रन बनाकर पलटवार किया पर राधा के सामने वह टिक नहीं पायी। इसके बाद चरणी ने एलिस कैप्सी को भी पेवेलियान भेज दिया जिससे इंग्लैंड का स्कोर पांच विकेट पर 93 रन पहुंच गया।

राधा यादव की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी भारत ए टीम

मुम्बई (एजेंसी)। साधू यादव को कप्तानी में भारत ए महिला टीम क्रिकेट टीम अगले माह ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी। ऑफ स्पिनर श्रेयंका पाटिल और तेज गेंदबाज टिटास साधु को भी को इस टीम में शामिल किया गया है। ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भारत ए टीम सात से 24 अगस्त के बीच तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और इतने ही एकदिवीसय और चार दिवसीय मैच खेलेगी। श्रेयंका पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में हुए महिला टी20 विश्व कप के बाद से ही फिट नहीं होने के कारण टीम से बाहर हैं। उन्हें सितंबर में महिला कैरेबियन प्रीमियर लीग (डब्ल्यूसीपीएल) में खेलने के लिए गत चैंपियन बारबाडोस रॉयल्स ने पहले ही शामिल कर लिया है। टिटास फिट नहीं होने के कारण श्रीलंका में त्रिकोणीय सीरीज के अलावा इंग्लैंड में सीमित ओवरों की सीरीज के लिए भी शामिल नहीं की गयीं थी।

सोने के भाव 97,250 रुपए चांदी 1,10,400 रुपए के करीब

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोने-चांदी के वायदा कारोबार की शुरुआत में तेजी देखी जा रही है। दोनों के वायदा भाव शुक्रवार को तेजी के साथ खुले। चांदी के वायदा भाव सार्वजनिक स्तर पर पहुंच गए। घरेलू बाजार में सोने के भाव 97,250 रुपये, जबकि चांदी के भाव 1,10,400 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार सोने-चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी देखने को मिल रही है। सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 561 रुपये की तेजी के साथ 97,252 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 96,691 रुपये था। इस समय यह कॉन्ट्रेक्ट 559 रुपये की तेजी के साथ 97,250 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क सितंबर कॉन्ट्रेक्ट 210 रुपये की तेजी के साथ 1,09,333 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 1,09,123 रुपये था। इस समय यह 1,291 रुपये की तेजी के साथ 1,10,414 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। वैश्विक बाजार में सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। कॉमेक्स पर सोना 3,333.10 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,325.70 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 20.10 डॉलर की तेजी के साथ 3,345.80 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव ने इस साल 3,509.90 डॉलर के भाव पर सार्वजनिक स्तर को छू लिया है। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 37.64 डॉलर के भाव पर खुले। पिछला बंद भाव 37.30 डॉलर था। इस समय यह 0.53 डॉलर की तेजी के साथ 37.83 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

एफआईएच जूनियर महिला विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट इस साल के अंत में होगा

सैंटियागो (एजेंसी)। एफआईएच जूनियर महिला विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट इस साल के अंत में होगा। इसमें भारतीय टीम का पहला मुकाबला एक दिसंबर को नामीबिया से होगा। इसी दिन मेजबान टीम चिली का भी पहला मुकाबला नीदरलैंड से होगा। नीदरलैंड अभी जूनियर महिला विश्व चैंपियन है और दुनिया की नंबर एक टीम है। इस टूर्नामेंट की शुरुआत जर्मनी और आयरलैंड के बीच मैच से होगी। यह टूर्नामेंट 1 से 13 दिसंबर, 2025 तक सैंटियागो शहर में खेला जाएगा और इसमें 24 टीमें शामिल होंगी। भारतीय टीम को इसमें ग्रुप सी में रखा गया है। भारतीय टीम के साथ इस ग्रुप में जर्मनी, आयरलैंड और नामीबिया की टीमें हैं। टूर्नामेंट में भारतीय टीम 3 दिसंबर को जर्मनी और 5 दिसंबर को आयरलैंड से खेलेगी। महिला जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप पिछली बार साल 2023 में सैंटियागो में हुआ और तब 16 टीमों ने भाग लिया था। इस बार टीमों की संख्या बढ़कर 24 हो गयी है। ऐसे में प्रशंसकों को अधिक मुकाबले देखने को मिलेंगे।

टीमें और उनके पूल इस प्रकार हैं =

ग्रुप ए में नीदरलैंड, जापान, चिली, मलेशिया

ग्रुप बी में अर्जेंटीना, बेल्जियम, ज़िम्बाब्वे, वेल्स

ग्रुप सी में भारत, जर्मनी, आयरलैंड, आयरलैंड

ग्रुप डी में इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, चीन और ऑस्ट्रिया

ग्रुप ई में ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, कनाडा और स्कॉटलैंड

ग्रुप एफ में संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया, न्यूजीलैंड और उरुग्वे शामिल हैं।

क्रॉसओवर और नॉकआउट राउंड के मैच 7 दिसंबर से खेले जाएंगे, जबकि फाइनल 14 दिसंबर को खेला जाएगा।

एमसीसी संग्रहालय में सचिन की तस्वीर का अनावरण हुआ

लंदन (एजेंसी)। यहां लॉर्ड्स स्थित एमसीसी संग्रहालय में भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच से पहले महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर की नई तस्वीर का अनावरण हुआ। ब्रिटिश कलाकार स्टुअर्ट पियर्सन राइट द्वारा बनाई गई इस तस्वीर में तेंदुलकर की विशाल छवि को दिखाय गया है और यह इस वर्ष के अंत में मंडप में स्थानांतरित किए जाने से पहले संग्रहालय में रहेगी। इसी को लेकर एमसीसी की संग्रह एवं कार्यक्रम प्रबंधक चार्लोट गुडह्यू ने कहा, सचिन तेंदुलकर जैसे व्यक्तित्व की तस्वीर को संग्रहालय में शामिल करना विशेष बात है। एमसीसी की संग्रहित तस्वीर में यह किसी भारतीय खिलाड़ी की पांचवीं और पियर्सन राइट द्वारा बनायी चौथी तस्वीर है। यहां तेंदुलकर से पहले कपिल देव, बिशन सिंह बेदी और दिलीप वेंगसरकर की तस्वीरें उन्होंने बनायी हैं। कपिल देव, बिशन बेदी और दिलीप वेंगसरकर की आदमकद तस्वीरों के विपरीत सचिन की तस्वीर सिर्फ

उनकी छाती तक है। यह पेंटिंग 18 साल पहले मुंबई में तेंदुलकर के घर पर ली गई एक तस्वीर पर आधारित है।

तस्वीर के अनावरण और लॉर्ड्स टेस्ट की शुरुआत से पहले घंटी बजाने के बाद सचिन ने कहा, 1983 में, जब भारत ने विश्व कप जीता, तब लॉर्ड्स से मेरा पहला परिचय हुआ। मैंने हमारे कप्तान कपिल देव को ट्रॉफी उठाते देखा। उस पल ने मेरे क्रिकेट के सफर को तेजी दी। आज, पवेलियन में मेरी तस्वीर लगने से, ऐसा लग रहा है, जैसे जिंदगी का एक चक्र पूरा हो गया हो।

तीसरे टेस्ट मैच की शुरुआत से पहले सचिन ने प्रतिष्ठित घंटी बजाई। गौरतलब है कि साल 2007 में शुरू की गई यह परंपरा क्रिकेट की सबसे प्रिय परंपराओं में से एक है, जो उन खिलाड़ियों के लिए आरक्षित है जिन्होंने खेल पर अपनी विशेष छाप छोड़ी है। तेंदुलकर ने 2013 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा था। वह अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन और शतक बनाने वाले बल्लेबाज हैं। तीनों प्रारुपों को मिलाकर सचिन ने कुल 34,357 रन बनाए हैं और रिकॉर्ड 100 शतक लगाए हैं। पियर्सन राइट ने कहा, एमसीसी पिछली तस्वीरों से कुछ अलग चाहता था, इसलिए मैंने सचिन के चेहरे पर ध्यान केंद्रित किया।

करुण को नहीं सुदर्शन को तीसरे नंबर पर उतारें - मांजरेकर

मुम्बई (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने कहा है कि आठ साल बाद टीम में शामिल किये गये करुण नायर को नंबर तीन पर नहीं उतारा जाना चाहिये। करुण इस सीरीज में अब तक असफल रहे हैं। वह दोनो ही मैचों में रन नहीं बना पाये हैं। मांजरेकर ने कहा कि अभी इस बल्लेबाज को अवसर मिलने चाहिये क्योंकि एक-दो मैचों के आधार पर फैसला नहीं हो सकता। मांजरेकर ने इसके साथ ही केवल एक मैच के बाद बाहर कर दिये गये साई सुदर्शन का समर्थन करते हुए कहा कि वह प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ी है जिसे अभी अपने को साबित करने पर्याप्त अवसर मिलने चाहिये। साथ ही कहा कि सुदर्शन को नंबर तीन पर उतारना चाहिये। वहीं करुण को पांचे क्रम पर अवसर देना चाहिये। मांजरेकर ने कहा, पिछले मैच में चयन जिस प्रकार हुए उनसे में सहमत नहीं हूं। एक जीत उन फैसलों को कैसी सही ठहरा सकत है। सिर्फ एक मैच के बाद साई सुदर्शन को टीम से बाहर कर देना समझ से परे है क्योंकि वह एक युवा खिलाड़ी हैं और हम भविष्य के लिए उन पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने दूसरी पारी में काफी अच्छा प्रदर्शन किया। मैं उनके साथ रहना चाहता हूं, लेकिन यह टीम प्रबंधन थोड़ा अलग है और वे माहौल के अनुसार बदलाव करने में पीछे नहीं हटता है।

मांजरेकर ने सुदर्शन को तीसरे नंबर पर उतारने की जरुरत बतायी। साथ ही कहा कि करुण इस जगह के लिए उपयोगी नहीं है। उन्होंने कहा, मैं सुदर्शन को तीसरे नंबर पर देखना चाहूंगा। मेरी नजर में करुण तीसरे नंबर के खिलाड़ी नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा, अगर सभी बड़े शतक लगा रहे हैं, तो उन्हें एक टेस्ट के बाद बाहर करना अनुचित है। मुझे लगता है कि सुदर्शन भी और अवसर दिये जाने के अधिकारी हैं। मांजरेकर ने

करुण के चयन और टीम में वापसी के भावनात्मक पक्ष का हवाला देते हुए उनका समर्थन करते हुए कहा कि उन्हें अभी अवसर मिलने चाहिये। करुण ने साल 2027-18 में इंग्लैंड के खिलाफ ही तिहरा शतक लगाया था। उसके बाद भी वह टीम में अपनी जगह नहीं बचा पाये थे।

भारतीय टीम के शानदार प्रदर्शन से इंग्लैंड पर दबाव बढ़ा - धवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर शिखर धवन ने इंग्लैंड दौरे में भारतीय टीम के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा है कि जिस प्रकार से उसने अब तक खेला है उससे अब मेजबान टीम इंग्लैंड पर ही दबाव आ गया है। धवन ने कहा कि पहले टेस्ट में जहां टीम की ओर से पांच शतक लगे। वहीं दूसरे टेस्ट में बल्लेबाजी के साथ ही गेंदबाजी में भी भारतीय टीम ने कमाल करते हुए इंग्लैंड की बल्लेबाजी को ध्वस्त कर दिया। धवन ने इस सीरीज में शानदार प्रदर्शन के लिए युवा टीम की सराहना की है। धवन ने कहा, जिस तरह से लड़कों ने इस सीरीज में जबरदस्त वापसी की, उसने असली चरित्र और लचीलापन दिखाया और मुझे भरोसा है कि टीम आगे और बेहतर प्रदर्शन करेगी। धवन ने शुभमन गिल की कप्तानी और बल्लेबाजी को भी सराहा। उन्होंने कहा, शुभमन गिल ने अब तक के अपने प्रदर्शन से आगे बढ़कर नेतृत्व किया है। वहीं जिस प्रकार मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के बिना भी उसने जीत हासिल की उससे पता चलता है कि टीम में कितनी गहरायी है। बुमराह की कमी आकाशदीप ने महसूस नहीं होने दी। मोहम्मद सिराज ने भी बुमरा के नहीं होने पर काफी अच्छे से गेंदबाजी की कमान संभाली। पहले टेस्ट में टीम हालांकि जीत नहीं पायी पर उससे काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। पहले टेस्ट में शभमन, यशस्वी , और केएल राहुल ने शतक लगाये। उन्होंने कहा कि अनुभवी बल्लेबाजों केएल राहुल और यशस्वी जायसवाल ने अपने-अपने शतकों के साथ पहले टेस्ट में टीम को अच्छी शुरुआत दी थी। पूर्व सलामी बल्लेबाज ने कहा, केएल राहुल और यशस्वी जायसवाल ने भी धाराप्रवाह शतक लगाकर एक मजबूत बल्लेबाजी प्रदर्शन की नींव रखी। इंग्लैंड की धरती पर किसी भी टीम के लिए पांच शतक लगाना आसान नहीं होता। साथ ही कहा कि बुमराह ने भी हमेशा की तरह ही बल्लेबाजों पर दबाव बनाये रखा। धवन का कहना है कि अब जबकि सीरीज बराबरी पर है।। भारत अधिक लाभ वाली स्थिति में है।

योगराज बोले गंभीर अच्छा काम कर रहे, सीरीज जीतेगी भारतीय टीम

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर योगराज सिंह ने कहा है कि भारतीय टीम के कोच गौतम गंभीर अच्छा काम कर रहे हैं। इसलिए उनकी आलोचना न करें। योगराज के अनुसार गंभीर के मार्गदर्शन और शुभमन की कप्तानी में भारतीय टीम इस सीरीज में जरुर जीतेगी। दोनो ही टीमें अभी सीरीज में 1-1 से बराबरी पर हैं। अपने विवादास्पद बयानों के लिए चर्चाओं में रहने वाले योगराज ने कहा, भारतीय खिलाड़ी लगातार बेहतर प्रदर्शन कर अपना खेल सुधार रहे हैं। हमें हमेशा उनका समर्थन करना चाहिए। इसके अलावा गंभीर को लेकर भी नकारात्मक टिप्पणी नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, गंभीर, युवराज सिंह और राहुल द्रविड़ अब क्रिकेट को अपनी तरफ से दे रहे हैं क्योंकि क्रिकेट से उन्हें बहुत कुछ मिला है। अब अगर हमारी टीम सीरीज हारती भी है तो भी हमें उनका समर्थन करन चाहिए। योगराज ने उम्मीद जताई है कि टीम इंग्लैंड के खिलाफ इस सीरीज में बेहतर करेगी। उन्होंने कहा, अगर आप हारते हैं तो आपको सफाई नहीं देना है; अगर आप जीतते हैं तब भी आपको कुछ समझाने की जरूरत नहीं है। हमें उम्मीद है कि हम शुभमन गिल

की कप्तानी में सीरीज जीतेंगे। इससे पहले गंभीर का कोच के तौर पर रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। भारतीय टीम को उनके कोच रहते पहले न्यूजीलैंड और फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी ही धरती पर हार का सामना करना पड़ा है। वहीं अब इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज की शुरुआत टीम रही है और टीम ने अच्छी बल्लेबाजी और गेंदबाजी का प्रदर्शन किया है। युवा कप्तान शुभमन गिल ने जिस आत्मविश्वास से कप्तानी की है उससे उनके बढ़े हुए मनोबल का अंदाजा होता है।

टीसीएसी के कमजोर परिणामों से गिरावट पर रहे बाजार

सेंसे स 370 अंक गिरकर खुला, नि टी-50 25,255 के स्तर पर

मुंबई (एजेंसी)। वैश्विक बाजारों से मिलेजुले रूख के बीच भारतीय शेयर बाजार हफ्ते के लास्ट ट्रेडिंग सेशन शुक्रवार को गिरावट में खुले। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएच) के अप्रैल-जून 2025 तिमाही के नतीजे कमजोर रहने के चलते आईटी शेयर दबाव में दिखे। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 370 अंक की गिरावट लेकर 82,820 पर खुला। हालांकि, हिंदुस्तान लिवर के शेयर में उछाल से इंडेक्स ने थोड़ी वापसी की। लेकिन सुबह शुरुआत के बाद यह 199.24 अंक की गिरावट लेकर 82,991 पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह, नैशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी गिरावट लेकर 25,255 पर खुला। सुबह

शुरुआत के बाद यह 39.40 अंक की गिरावट के साथ 25,315 पर कारोबार कर रहा था। टीसीएस के अप्रैल-जून तिमाही 2025 नतीजे कमजोर रहने की वजह से आईटी स्टॉक्स में गिरावट देखी जा रही है। बाजार खुलते ही निफ्टी आईटी इंडेक्स 1.35 फीसदी से ज्यादा गिर गया। सबसे ज्यादा गिरावट इंफोसिस में आई। टीसीएस के शेयर पर भी दबाव दिखा। शेयर बाजार के लिए कई अहम फैक्टर्स का असर देखने को मिल सकता है। वहीं एशिया-पैसिफिक के बाजारों में आज मिला-जुला रुख देखने को मिला। एशियाई बाजारों की बात करें तो निक्केई में 0.21 फीसदी जी देखी गई, जबकि टोपिक्स इंडेक्स 0.71 फीसदी चढ़ा।

कोस्पी मामूली 0.013 फीसदी ऊपर रहा और ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स200 0.064 फीसदी हल्की गिरावट में रहा। वहीं गुरुवार को अमेरिकी शेयर बाजारों में मजबूती रही। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.27 फीसदी की बढ़त के साथ 6,280.46 के रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुआ। नेस्डेक कंपोजिट भी लगातार दूसरे दिन नए शिखर पर पहुंचा और 0.09 फीसदी की तेजी के साथ 20,630.67 पर बंद हुआ। डाओ जोंस इंडस्ट्रियल एवरेज 192.34 अंक चढ़कर 44,650.64 पर बंद हुआ।

रुपया 19 पैसे टूटकर 85.89 डॉलर पर खुला

मुंबई (एजेंसी)। रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 19 पैसे टूटकर 85.89 पर आ गया। अमेरिका के अगले महीने से कनाडा पर 35 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा के बाद निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 85.76 पर खुला। फिर 85.89 प्रति डॉलर पर लुढ़क गया जो पिछले बंद भाव से 19 पैसे की गिरावट दर्शाता है। रुपया गुरुवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 85.70 पर बंद हुआ था।

उप मुख्यमंत्री ने नशामुक्त भारत अभियान के तहत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की

नशे के सौदागरों पर कड़ी कार्रवाई तथा नशीली सामग्री के तंत्र को समाप्त करने के दिये निर्देश

रीवा संभाग में नशे के विरूद्ध अभियान में बहुत अच्छा काम हो रहा है - उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने नशामुक्त भारत अभियान के तहत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा संभाग में पिछले 6 महीने में नशामुक्त अभियान के तहत बहुत अच्छा कार्य किया जा रहा है। बड़ी संख्या में नशे के व्यापार में लिप्त व्यक्तियों को जेल भेजने के साथ गांजा और कोरेक्स की भारी मात्रा में बरामदगी की गई है। नशा व्यक्ति के तन, मन और धन तीनों का विनाश करता है। रीवा और पूरे विन्ध्य क्षेत्र में चारों ओर हो रहा तेजी से विकास तभी सार्थक होगा जब भावी पीढ़ी को नशे से दूर रखा जाए। भावी पीढ़ी नशे की राह पर चली गई तो हर तरह का विकास बेमानी हो जाएगा।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरेक्स तथा अन्य नशीले कप सिरप जहाँ पर बनाए जाते हैं वहाँ से जिले में पहुंचने और बिक्री होने तक के पूरे तंत्र पर कड़ी निगरानी रखकर कार्रवाई करें। नशे के सौदागरों को जेल में भेजने के साथ कड़ी सजा दिलाने के प्रयास करें। अपराधियों पर कार्रवाई के साथ-साथ नशीले पदार्थों के आदी व्यक्तियों के पुनर्वास के भी प्रयास करें। इस कार्य में विभिन्न विभागों के साथ-साथ सामाजिक संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा आमजनों का पूरा सहयोग प्राप्त करें। नशा सामाजिक और आर्थिक बुराई होने के साथ-साथ अपराधों का भी मूल है। पूरे संभाग में नशे के विरूद्ध बड़ा जागरूकता अभियान चलाएं।

बैठक में पुलिस महानिरीक्षक गौरव राजपूत ने संभाग विशेषकर रीवा जिले में नशे के विरूद्ध की जा रही कार्रवाई की जानकारी देते हुए बताया कि पिछले 6 महीने में दो करोड़ से अधिक राशि के नशीले कप सिरप और गांजा की जप्ती की गई है। संभाग भर में अभियान चलाकर एक दिन में ही अवैध शराब के निर्माण पर कार्रवाई करते हुए 1017 आरोपियों को गिरफ्तार कर 22 लाख रुपए की अवैध शराब जप्त की गई। नशे के अवैध कारोबार में लिप्त व्यक्तियों पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। रीवा जिले में वर्ष 2023 में 176, वर्ष 2024 में 162 तथा वर्ष 2025 में अब तक 129 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। आमजनता से संवाद के लिए थाना स्तर पर जनचौपाल का आयोजन करके आमजनता की समस्याओं का मौके पर निराकरण किया जा रहा है। पुलिस ने पशु तस्करों पर कार्रवाई करते हुए दो हजार से अधिक पशुओं को मुक्त कराकर विभिन्न गौशालाओं में भेजा है। पशु तस्करी में लिप्त 32 आरोपियों को जेल भेजा गया है। पुलिस ने 250 से अधिक गुमे हुए व्यक्तियों को बरामद कर उनके परिजनों को सौंपा है। पुलिस महानिरीक्षक ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए की जा रही रात्रिकालीन गश्त, फरार वारंटियों की गिरफ्तारी तथा अन्य कार्यवाहियों की भी जानकारी दी। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, राजेश पाण्डेय तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

अमरपाटन में कच्ची दीवार ढहने से हादसा, दबी महिला

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर जिले के अमरपाटन थाना क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 10 में बीती रात करीब 9 बजे लगातार बारिश के कारण एक कच्चा मकान ढह गया। इस हादसे में 50 वर्षीय मुन्नी रजक मलबे में दब गईं। घटना के समय मुन्नी बाई अपने परिवार के साथ घर पर थीं और एक कमरे में टीवी देख रही थीं, तभी नमी से कमजोर हुई 7 फीट ऊंची कच्ची दीवार अचानक भरभराकर गिर पड़ी।

स्थानीय लोगों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर मलबे में दबी मुन्नी बाई को बाहर निकाला और उन्हें अमरपाटन के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों के अनुसार, उनकी स्थिति अब स्थिर है। अमरपाटन थाना प्रभारी के.पी. त्रिपाठी ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचा, जिसके बाद महिला को सुरक्षित निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल उनका इलाज जारी है।

जीजा पर युवती ने लगाया चलती बस में गलत काम करने का आरोप

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर जिले से एक बार फिर रिश्तों को कलंकित करने वाली घटना सामने आई है। एक 21 वर्षीय युवती ने अपने सगे जीजा पर चलती बस में दुष्कर्म का गंभीर आरोप लगाया है। युवती का कहना है कि आरोपी ने रिश्ते की मर्यादाओं को तोड़ते हुए न केवल उसका शारीरिक शोषण किया, बल्कि धमकी देकर चुप रहने के लिए भी मजबूर किया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

घटना 26 जून की है, जब युवती रीवा में अपने जीजा से मिलने पहुंची थी। आरोपी पहले से ही युवती से मोबाइल पर बात करता था। मुलाकात के बाद उसने युवती को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया। दोनों ने रीवा रेलवे स्टेशन से हैदराबाद जाने वाली ट्रेन पकड़ी, लेकिन परिजनों को जानकारी मिलने पर दबाव के चलते आरोपी युवती को लेकर कटनी स्टेशन पर उतर गया। वहां से दोनों ने वापसी के लिए एक स्लीपर बस पकड़ी। युवती के अनुसार, रात करीब 10.30 बजे जब बस अमरपाटन के पास थी, तब आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर उसने वीडियो वायरल करने की धमकी दी और बस से उतरकर फरार हो गया।

घटना के बाद युवती किसी तरह रीवा पहुंची, जहां उसकी हालत बिगड़ने पर उसे संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया। 28 जून को युवती ने अपनी बड़ी बहन को आपबीती सुनाई, जिसके बाद परिजनों ने 3 जुलाई को रीवा सिटी कोतवाली में मामला दर्ज कराया। अब यह केस मैहर थाने को स्थानांतरित कर दिया गया है। मैहर एसपी सुधीर अग्रवाल ने बताया कि मामला बेहद गंभीर है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और टीमें गठित कर आरोपी की गिरफ्तारी के लिए कई स्थानों पर दबिश दे रही हैं।

खस्ताहाल बसों में छाता लगाकर कर रहे सफर, जोखिम में यात्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। परिवहन विभाग की लापरवाही के कारण खस्ताहाल बसें सड़कों पर दौड़ रही हैं, जिससे यात्रियों की जान खतरे में पड़ गई है। बसों की हालत इतनी खराब है कि यात्रियों को छाता लगाकर सफर करना पड़ रहा है, जबकि किराया उनसे पूरा लिया जा रहा है। शुक्रवार सुबह मऊगंज में ऐसा ही नजारा देखने को मिला, जहां मऊगंज से ढेरा जा रही एक बस में आधे से ज्यादा यात्री छाता लगाए बैठे थे, क्योंकि बस में बारिश का पानी टपक रहा था। यात्रियों ने इस स्थिति पर नाराजगी जताते हुए परिवहन विभाग पर कार्रवाई की मांग की है। बसों की खराब हालत और रखरखाव की कमी के कारण लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

निजी नर्सिंग होम में महिला मरीज की मौत पर परिजनों को हंगामा

परिजनों ने लगाया लापरवाही का आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के जेलमार्ग स्थित सिटी हॉस्पिटल में भर्ती एक महिला मरीज की मौत के बाद हंगामा हो गया। मृतका संगीता चतुर्वेदी, बिछिया थाना क्षेत्र के गड्डी रोड की निवासी थीं, जिनका बच्चेदानी का ऑपरेशन डॉक्टर मुक्ता शर्मा द्वारा किया गया था। ऑपरेशन के बाद अचानक उनकी तबीयत बिगड़ने पर उन्हें सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

महिला की मौत के बाद परिजनों ने सिटी हॉस्पिटल के प्रबंधन पर इलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। उनका कहना था कि ऑपरेशन के दौरान शुगर और बीपी की जांच नहीं की गई, जिसके कारण उनकी हालत बिगड़ी। परिजनों ने यह भी दावा किया कि अस्पताल ने घटना के बाद फाइल और दस्तावेज छिपाने की कोशिश की, जिसका वीडियो उनके पास सबूत के रूप में है। उन्होंने सवाल उठाया कि छोटे बच्चों के साथ मृतका का परिवार अब क्या करेगा।

हालांकि, डॉक्टर प्रियंक शर्मा ने सफाई देते हुए बताया कि संगीता पहले से हार्ट पेशेंट थीं और उन्हें 20 साल से डायबिटीज व हाई बीपी की समस्या थी। ऑपरेशन से पहले उनकी एंजियोग्राफी हुई थी और कार्डियक फिटनेस के बाद ही सर्जरी की गई थी। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन के दो दिन तक मरीज की हालत स्थिर थी, लेकिन कल रात अचानक हार्ट अटैक के कारण उनकी मौत हुई। सुबह 6 बजे परिजनों ने मरीज को रिस्पॉन्स न करने पर सूचित किया, जिसके बाद तुरंत कार्डियोलॉजिस्ट को बुलाया गया और सुपर स्पेशलिटी के लिए रेफर किया गया।

डॉक्टर के मुताबिक, मरीज के परिजनों को पहले से ही जोखिम के बारे में बताया गया था और सुपर स्पेशलिटी में इलाज के दौरान उनकी मौत हुई। परिजनों का मुख्य मुद्दा एडवांस पैसे की वापसी था, जिसे हल कर लिया गया। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के चिकित्सकों ने भी हार्ट अटैक को मौत का कारण माना, जिसके बाद परिजन शव लेकर चले गए। हालांकि, कुछ लोग अब भी इलाज में लापरवाही के सवाल उठा रहे हैं।

त्योंथर विधायक से छात्रा ने लगाई सड़क बनवाने की गुहार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। त्योंथर तहसील के आमाव गांव की छात्रा वैष्णवी मिश्रा ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर गांव की खराब सड़क को ठीक करने की गुहार लगाई है। छात्रा ने कलेक्टर के बाद अब विधायक सिद्धार्थ तिवारी से भी इस समस्या के समाधान की अपील की, लेकिन तीन दिन बीत जाने के बावजूद विधायक ने ध्यान नहीं दिया। वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है, जिससे क्षेत्र में नाराजगी बढ़ गई है।

हिनौती गौधाम को आदर्श गौ अभ्यारण्य बनाया जाएगा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में हिनौती गौधाम के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हिनौती गौधाम को आदर्श गौ अभ्यारण्य बनाया जाएगा।

इसमें 25 हजार से अधिक गौवंश को आश्रय मिलेगा। इसके बाउन्ड्रीवाल का निर्माण कार्य पूरा कराकर गौवंश को सुरक्षित करें। इसके परिसर में उपयुक्त स्थलों पर वृक्षारोपण भी कराएं। गौशाला के स्वागत द्वार और सड़क का निर्माण शीघ्र पूरा कराएं। गौशाला में रह रहे निराश्रित गौवंश के भोजन, पानी तथा उपचार की समुचित व्यवस्था करें। गौशाला के विकास के लिए मिलकर प्रयास करें। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने ग्रामीण यांत्रिकी विभाग तथा ग्राम पंचायत द्वारा गौशाला में कराए जा रहे निर्माण कार्यों की जानकारी दी। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, जनपद अध्यक्ष गंगेव विकास तिवारी, जिला गौ संवर्धन बोर्ड के उपाध्यक्ष राजेश पाण्डेय, परियोजना अधिकारी जिला पंचायत संजय सिंह तथा अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

नेशनल लोक अदालत का आयोजन 13 सितम्बर को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नेशनल लोक अदालत का आयोजन 13 सितम्बर को किया जाएगा। नालसा के निर्देशानुसार नेशनल लोक अदालत में लंबित एवं प्री-लिटिगेशन प्रकरण निराकरण के लिए रखे जाएंगे। नेशनल लोक अदालत में राजीनामा योग्य प्रकरणों को अधिक से अधिक संख्या में निराकरण किया जाएगा।

रीवा संभाग में अब तक 357 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग में एक जून से अब तक 357 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। संभाग में 11 जुलाई को 46 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। सर्वाधिक 78 मिलीमीटर वर्षा मैहर जिले में दर्ज की गई। संभाग में एक जून से अब तक सर्वाधिक 537 मिलीमीटर वर्षा मऊगंज जिले में दर्ज की गई है। संभाग में इस अवधि में रीवा जिले में 189.2 मिलीमीटर, सतना में 285.6 मिलीमीटर, मैहर में 363.4 मिलीमीटर, सीधी में 418.9 मिलीमीटर तथा सिंगरौली जिले में 353 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। गत वर्ष इसी अवधि में संभाग में 151 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई थी। संभाग में सिंचाई के प्रमुख स्त्रोत बाणसागर बांध में 11 जुलाई को सुबह 8 बजे तक जल स्तर 339 मीटर तक पहुंच गया है। गत वर्ष 11 जुलाई तक इसका जल स्तर 332.31 मीटर पर था। बांध में 74 प्रतिशत जल भराव हो गया है। वहीं रीवा 11 जुलाई 2025. जिले में एक जून से अब तक 189.2 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की जा चुकी है। जिले में 11 जुलाई को 17.7 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। इस दिन तहसील हुजूर में 20 मिलीमीटर, गुढ़ में 34 मिलीमीटर तथा सेमरिया में 36 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई।

विद्यार्थी परिषद ने चिकित्सा शिक्षा मंत्री को सौंपा ज्ञापन, डॉ. अशरफ और अधिष्ठाता के विरुद्ध कार्रवाई की मांग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के जिला संयोजक पशुपतिनाथ पांडे के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को चिकित्सा शिक्षा मंत्री एवं उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला से राज निवास में मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने श्याम शाह मेडिकल कॉलेज के ईएनटी विभाग के चिकित्सक डॉ. अशरफ द्वारा नर्सिंग छात्राओं के साथ कथित अनुचित व्यवहार और दुर्व्यवहार के संबंध में ज्ञापन सौंपा।पांडे ने बताया कि डॉ. अशरफ द्वारा नर्सिंग छात्राओं के साथ अपमानजनक व्यवहार और दुर्व्यवहार की घटनाएं सामने आई हैं, जिससे छात्राएं मानसिक रूप से प्रताड़ित और असुरक्षित महसूस कर रही हैं। यह स्थिति उनकी शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है। छात्राओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बीएससी नर्सिंग द्वितीय और तृतीय वर्ष की छात्राओं की क्लीनिकल ड्यूटी ईएनटी वार्ड और ईएनटी ओटी से अस्थायी रूप से हटा दी गई है। हालांकि, अभाविप ने इसे अपर्याप्त बताया और कठोर कार्रवाई की मांग की।ज्ञापन में 8 जुलाई 2025 की घटना का भी उल्लेख किया गया, जब अभाविप कार्यकर्ता और नर्सिंग छात्राएं अनुशासित तरीके से मेडिकल कॉलेज के अधिष्ठाता को ज्ञापन सौंपने पहुंचे थे। आरोप है कि अधिष्ठाता के निर्देश पर सुरक्षाकर्मियों ने कार्यकर्ताओं और छात्राओं के साथ मारपीट की, जिसमें कई छात्राओं को चोटें आईं। पांडे ने दावा किया कि उनकी हत्या का प्रयास भी किया गया, जिसकी पुष्टि एमएलसी रिपोर्ट में हुई है।अभाविप ने मांग की है कि मामले की निष्पक्ष जांच की जाए, डॉ. अशरफ और मारपीट का निर्देश देने वाले अधिष्ठाता के खिलाफ कठोर कार्रवाई हो, अधिष्ठाता को निलंबित किया जाए, और डॉ. अशरफ को जेल भेजा जाए। संगठन ने चेतावनी दी कि मांगें पूरी न होने पर उग्र आंदोलन किया जाएगा।उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला ने आश्वासन दिया कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और किसी को बख्शा नहीं जाएगा। ज्ञापन सौंपते समय अभाविप के विभाग संगठन मंत्री प्रभात तिवारी, भाग संयोजक पवन द्विवेदी, नगर सह मंत्री लव कुमार पांडे, नगर विद्यालय संयोजक दीपांशु गौतम, नगर कार्यालय मंत्री अतुल मिश्रा और अजीत शुक्ला प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

भरहुत नगर में हादसा, कार पर गिरा पेड़, बाल-बाल बचा परिवार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के भरहुत नगर में गुरुवार रात करीब 10 बजे एक बड़ा हादसा टल गया, जब पृथ्वीराज शोरूम के सामने खड़ी एक कार पर अचानक पेड़ गिर गया। कार में बैंककर्मी दीपक निगम अपनी मां, मौसी, बहू और एक साल के नाती के साथ सवार थे। आसपास मौजूद लोगों ने त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सौभाग्यवश, किसी को चोट नहीं आई, लेकिन कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

जानकारी के मुताबिक, बारिश के कारण पेड़ की जड़ कमजोर होने से यह हादसा हुआ। घटना के समय न बारिश थी और न ही तेज हवाएं चल रही थीं। पेड़ गिरने से भरहुत नगर में ट्रैफिक जाम लग गया। सूचना मिलते ही नगर निगम की अतिक्रमण शाखा की टीम मौके पर पहुंची और करीब डेढ़ घंटे की मेहनत के बाद पेड़ को हटाकर क्षतिग्रस्त कार को निकाला गया। नगर निगम के कार्यपालन यंत्री अंशुमान सिंह ने बताया कि पेड़ को हटाकर यातायात बहाल कर दिया गया है।

धरती आबा जन भागीदारी अभियान का आयोजन 13 जुलाई को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अनुसूचित जाति एवं जनजातीय कार्य विभाग द्वारा धरती आबा जन भागीदारी अभियान का आयोजन 13 जुलाई को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में किया जाएगा। इस आयोजन के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल होंगे। अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं के पात्र हितग्राहियों को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से लाभान्वित किया जाएगा।

उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित होने वाले पात्र हितग्राहियों की उपस्थिति सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं।

कमिश्नर आज सिंगरौली में नगर निगम के कार्यों की करेंगे समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद सिंगरौली नगर निगम के निर्माण कार्यों, शासन की प्राथमिकता वाली विभिन्न योजनाओं, विभागीय गतिविधियों एवं बाढ़ की तैयारियों की समीक्षा करेंगे। बैठक नगर निगम सभागार सिंगरौली में 12 जुलाई को सुबह 11 बजे से आयोजित की गई है। बैठक में सिंगरौली नगर निगम आयुक्त, सहायक यंत्री एवं अन्य अधिकारी शामिल रहेंगे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।